ISSN 2455-9644

आसरा मुक्तागन

फरवरी–2025

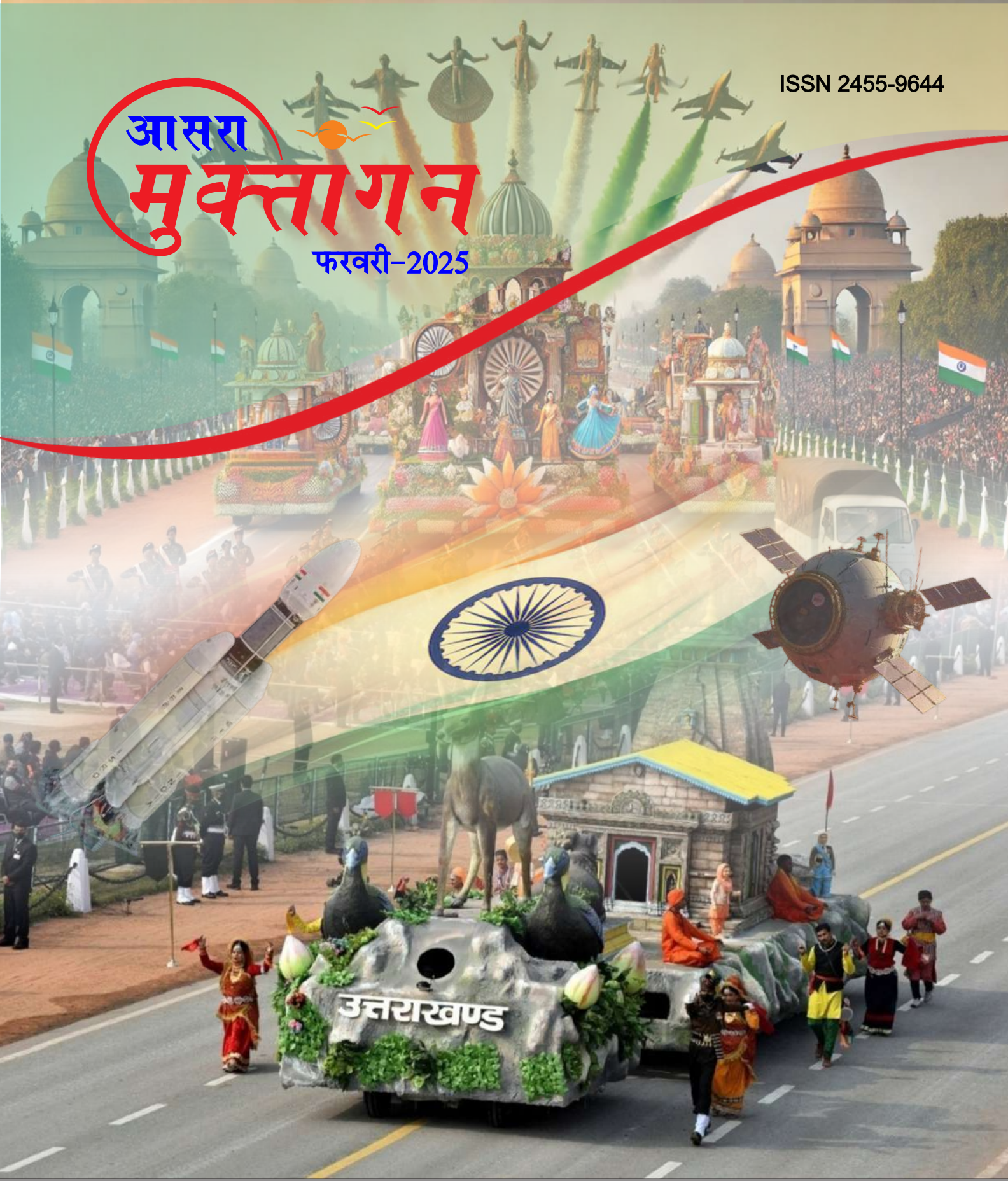

₹30/-

समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान

ग्रेट रतन टाटा सर के जन्मोत्सव पर 'इंडिया मीडिया लिंक एंड इव्हेंटस' के माध्यम से दादर माटुंगा कल्चरल सेंटर में 28 जनवरी 2025 को भव्यदिव्य समूह द्वारा जोश, उत्साह के साथ इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस समारोह में उद्यमिता, सामाजिक, चिकित्सा, शैक्षिक और नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों हेतु देशभर के गणमान्य व्यक्तियों को आकर्षक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बॉलीवुड सेलिब्रिटी, उद्यमी और सामाजिक कार्यकर्ता के. रवि दादा ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का विधिवत सम्मान किया।

मुंबई कस्टम्स के नौजवान सत्यवान रेडकर रतन टाटा सम्मान से सम्मानित।

विस्तृत रपट पेज नंबर-22

You can also follow us on and "Aasara Muktangan"

प्रकाशक-मुद्रक
महानंदा शिरकर

प्रधान संपादक
डॉ. रमेश मिलन

संपादक
डॉ. विमलेश शिरकर

प्रबंध संपादक
मोहन शिरकर

कार्यकारी संपादक
पवित्रा सावंत

उप-संपादक
डॉ. रमेश यादव, गुरुप्रित

संपादकीय मंडल
- डॉ. सुलभा कोरे
- डॉ. सतीश पाण्डेय
- प्रो. कुसुम त्रिपाठी
- श्री स. वि. लव्हटे
- श्री संजय भारद्वाज
- श्री बाळकृष्ण लोहोटे

सलाहकार मंडल
- गयाचरण त्रिवेदी
- डॉ. चंद्रशेखर आष्टीकर
- सरिता आहुजा (कनाड़ा)
- माधवराव अंभोरे
- जानकी प्रसाद, दिल्ली

समन्वयक एवं प्रवक्ता
- डॉ. रत्नाकर सं. अहिरे

जनसंपर्क एवं विशेष आयोजन
- बाळकृष्ण ताम्हाणे
- किशन नेनवानी
- घनश्याम कोळंबे
- दिनेश सिंह
- राजकरन पाण्डेय
- दत्तात्रय कावरे

विधि सलाहकार
- ऍड. रमेश शाह

विशेष प्रतिनिधि
- डॉ. वेणुगोपाल कृष्ण, चेन्नई
- आशीष कुमार, मुंबई

संपादकीय सहयोग एवं सज्जा
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : 8920111592, 9911077754

आसरा
मुक्तांगन
www.aasaramuktangan.com
फरवरी-2025 वर्ष : 13, अंक : 6

इस अंक में

संपादकीय- डॉ. विमलेश शिरकर-
गणतंत्र दिवस : हमारे लोकतंत्र की मजबूती का प्रतीक 5
मुंशी प्रेमचंद- नमक का दरोगा 7
डॉ. ओमप्रकाश शर्मा- राष्ट्र के प्रति संकल्प 12
विजय गर्ग- ऋतुओं का राजा वसंत 16
सुरक्षा कटियार- शेर और खरगोश की कहानी 17
न्यायमूर्ति अनंत माने-
जानने-समझने-अमल करने के लिए शिक्षा निहायत जरूरी 18
हृषिकेश शरण- उत्तम पुरुषों की संगति कल्याणकारी होती है 19
पवित्रा सावंत- जीवन : एक आध्यात्मिक बाग 20
लव क्षीरसागर-
मुंबई के माटुंगा में उद्योगपति रतन जी टाटा का नया अवतार... 22
राम विलास शास्त्री- गणतंत्र दिवस : एक नई शुरुआत की कहानी 24
कुसुम त्रिपाठी-
स्त्रियों के संदर्भ में भूमंडलीकरण में समाज के बदलते रूप 27
डॉ. उदयप्रताप सिंह- हिंदी और भारतीय भाषाओं की अंतश्चेतना 30
सुनील कुमार महला- अंतरिक्ष में सिरमौर बन रहा है भारत 33
अशोक गुजराती- कोहनी 35
अमिता अम्बस्ट- सपने देते हैं हम सब 36
गोपाल आत्माराम बाघ- जीना है तो ऐसे जीयो... 36
दिविक रमेश- बाल कविताएं 37
गतिविधियां- 38-40
राकेश मुटरेजा- भक्ति का असली स्वरूप 42

अकादमिक मंडल

न्यायमूर्ति अनंत डी. माने
उच्च न्यायालय, मुंबई (सेवानिवृत्त)

श्री ऋषिकेश शरण
प्रशासक

डॉ. नरेशचंद्र
प्रतिकुलपति, मुंबई वि.वि. (सेवानिवृत्त)

डॉ. माधुरी छेड़ा
शिक्षाविद

साहित्य मंडल

डॉ. सूर्यबाला
साहित्यकार

डॉ. दामोदर खड़से
साहित्यकार

डॉ. रामजी तिवारी
शिक्षाविद-समीक्षक

डॉ. दामोदर मोरे
मराठी कवि

सहयोग

राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, वर्धा
धनंजय शिंदे
सुनील पाटिल
शबाना पटेल
श्रद्धा गांगन
जयश्री घाडगे (प्रबंध सहयोग)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के अपने विचार हैं। संपादक का इनके साथ सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

- संपादक

'आसरा मुक्तांगन' का अभियान 'वृक्ष लगाएं, बढ़ाएं'

वर्तमान में तापमान हर जगह बढ़ रहा है। पसीना, गर्मी और उससे उत्पन्न तकलीफें...मानव झुलस रहा है, जमीन तप रही है, उसमें दरारें पड़ रही है, पशु-पक्षी आदि सभी जीव गर्मी में झुलस कर मर रहे हैं और पेड़-पौधे भी पानी के अभाव में सूख रहे हैं।

यह है 'ग्लोबल वार्मिंग' का परिवेश, जो हम सबको एक ऐसे माहौल की ओर ले जा रहा है, जहां हमारे विश्व, हमारी भविष्यगत पीढ़ी को बहुत कुछ भुगतना पड़ेगा। हमने घर, रास्ते बनाएं; हमने अपने लिए संरचनात्मक सुविधाएं जुटायी और इन सब बातों को अंजाम देने के लिए हम वृक्षों को काटते गए।

वृक्ष इस पृथ्वी का सहारा, हमारा पनाहगार जो भूमि के अंदर जाकर अपनी जड़ों से पानी को संवर्धित करता है और जमीन से ऊपर बढ़कर बादलों को आसमान से नीचे उतरवाकर बरसात करवाता है तथा हमें छांव देकर कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम करते हुए ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है।

वृक्ष का महत्व, पर्यावरण में उसकी उपयुक्तता असाधारण है, जिसे हमें जानना, पहचानना और समझना होगा। अन्यथा हम स्वयं भी झुलसते रहेंगे और हमारी भविष्यगत पीढ़ी को इससे भी ज्यादा झुलसाते रहेंगे।

पर्यावरण के संवर्धन को 'आसरा मुक्तांगन' ने अपना जीवन उद्देश्य बनाया है। हर परिवार दो-तीन वृक्ष लगाएं, उनका संवर्धन करें। इसलिए 'आसरा मुक्तांगन से संबंधित सभी संस्थाओं, सदस्यों, समर्थनकर्ताओं, संरक्षकों तथा भारत के सभी परिवारों से अनुरोध है, अपील है कि वे 'वृक्ष संवर्धन अभियान' के बारे में अपने क्रियाकलापों, गतिविधियों से संबंधित फोटो- जानकारी के साथ नीचे दिए गए पते पर 'आसरा मुक्तांगन' हेतु प्रेषित करें। आपके प्रयासों को उचित स्थान और प्रोत्साहन देना, हमारा काम होगा...

आसरा मुक्तांगन, पोस्ट बैग-01,
कलवा, ठाणे-400605 महाराष्ट्र, भारत
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com

'आसरा मुक्तांगन' के संदर्भ में

'आसरा मुक्तांगन' राष्ट्रभाषा हिंदी तथा राष्ट्र को समर्पित एक साहित्यिक मासिक पत्रिका है। समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य और अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए एक सशक्त राष्ट्र की नींव को परिपुष्ट करना पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है। नवयुवकों, नारी तथा बुजुर्गों में जागृति का संचार करना तथा देश में घर-घर तक साहित्य और संस्कृति के उच्चतम संस्कारों को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लक्ष्य पूर्ति हेतु, पत्रिका सतत प्रयत्नशील है। पत्रिका का प्रकाशन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओतप्रोत प्रकाशक एवं संपादक मंडल का एक सारस्वत अभियान है।

-आसरा मुक्तांगन

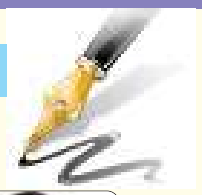

गणतंत्र दिवस: हमारे लोकतंत्र की मजबूती का प्रतीक

गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी, केवल एक ऐतिहासिक दिन नहीं है, बल्कि यह हमारे लोकतंत्र की शक्ति और गौरव का प्रतीक है। इस दिन भारतीय संविधान लागू हुआ था, जिसने हमारे देश को एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में स्थापित किया। आज जब हम इस दिन को धूमधाम से मनाते हैं, तो यह हमें यह याद दिलाता है कि हमारी स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

समाज में हो रहे बदलावों के साथ, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हमारे संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों का उपयोग जिम्मेदारी के साथ करना आवश्यक है। संविधान ने हमें समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार दिया है, लेकिन हमें इन अधिकारों का सम्मान और पालन करना भी उतना ही जरूरी है।

आज, जब हम गणतंत्र दिवस पर परेड और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, तो यह हमें यह संदेश देता है कि हम एक समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र की ओर अग्रसर हैं। साथ ही, यह दिन हमें यह भी याद दिलाता है कि समाज में समानता और समरसता बनाए रखने के लिए हम सभी को मिलकर काम करना होगा।

हमारे जवानों, पुलिस बलों, और समाज के हर तबके के योगदान को सराहते हुए, यह दिन हमें एक नए संकल्प के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। आइए, हम इस गणतंत्र दिवस पर यह संकल्प लें कि हम अपने लोकतांत्रिक अधिकारों का सम्मान करेंगे और समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए काम करेंगे। सिर्फ शौर्य और वीरता के प्रतीक के रूप में गणतंत्र दिवस को न मनाएं बल्कि कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को भी समझें।

गणतंत्र दिवस की गूंज अभी थमी भी नहीं कि बसंत ऋतु अपने रंगों और खुशबुओं के साथ दस्तक देने लगी है। बसंत ऋतु को हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति में ऋतुओं का राजा कहा जाता है। यह शीत ऋतु के समाप्त होने और नवजीवन के आगमन का प्रतीक है। इस मौसम में प्रकृति एक नए रंग में रंगी हुई दिखाई देती है- फूल खिलते हैं, खेतों में फसलें लहलहाने लगती हैं, और वातावरण में एक नई ऊर्जा का संचार होता है।

बसंत ऋतु का सुंदर वर्णन हिंदी कवियों ने अपनी रचनाओं में किया है। सूरदास, तुलसीदास, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि ने बसंत की सुंदरता और इसकी मादकता को अपने काव्य में उकेरा है। महाकवि कालिदास ने इसे ऋतुराज कहा है। सूरदास ने इसे कृष्ण की रासलीला का मौसम बताया है। आधुनिक हिंदी साहित्य में भी बसंत को उत्साह और प्रेम की ऋतु के रूप में देखा गया है।

बसंत केवल एक ऋतु नहीं, बल्कि उल्लास, प्रेम, सौंदर्य और नई ऊर्जा का प्रतीक है। यह प्रकृति को ही नहीं, बल्कि मनुष्य के मन को भी नई उमंगों से भर देता है। इस मौसम में हर कोई ताजगी और नई ऊर्जा महसूस करता है,

जो जीवन में नई प्रेरणा लेकर आता है।

बसंत ऋतु में पेड़-पौधे फिर से हरे-भरे हो जाते हैं और नई कोपलें फूटने लगती हैं। सरसों के पीले फूल इस ऋतु की खास पहचान होते हैं। आम के बौर और फूलों की महक वातावरण को सुगंधित कर देती है। यह ऋतु न अधिक ठंडी होती है, न अधिक गर्म, इसलिए इसे स्वास्थ्य के लिए सबसे उत्तम माना गया है। इस समय शरीर में उत्साह और स्फूर्ति बढ़ जाती है। ताजे फल और हरी सब्जियाँ अधिक मात्रा में मिलती हैं, जिससे स्वास्थ्य बेहतर रहता है। बसंत ऋतु की शुरुआत बसंत पंचमी के साथ होती है, जो विद्या और ज्ञान की देवी सरस्वती को समर्पित है। पंजाब और उत्तर भारत में यह समय होली की तैयारियों का भी होता है, जिसमें रंगों का उत्सव मनाया जाता है। इस दिन लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं, पतंगबाजी का आनंद लेते हैं और देवी सरस्वती की पूजा करते हैं।

वैसे नारी एक शक्ति है, सम्मान है, नारी गौरव है, अभिमान है, कहां जाए तो नारी से ही सब विधान है और यह विधान महिला सशक्तिकरण और उनके योगदान का भी प्रतीक बन रहा है। जब हम नारी की बात करते हैं, तो यह जीवन में मिलने वाली छोटी-छोटी खुशियों, पुरस्कारों और मान-सम्मान से जुड़ा होता है। इसी तरह, नारी शक्ति भी आज हर क्षेत्र में सफलता की नई ऊंचाइयों को छू रही है, और उन्हें समाज से मिलने वाला सम्मान ही उनके लिए एक देवीय आदर की तरह है। महिलाओं को भी जब उनके कार्यों के लिए सराहा जाता है, तो यह नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम होता है।

महिला सिर्फ भौतिक उपहार नहीं, बल्कि सम्मान, प्रोत्साहन और स्नेह का प्रतीक हैं। जब नारी शक्ति को उसकी मेहनत, संघर्ष और सफलता का उचित मान-सम्मान और अवसर मिलता है, तो वही असली शक्ति होती हैं। समाज का कर्तव्य है कि वह महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर दे और उनके प्रयासों को पहचानकर सराहे।

❑❑❑

क्या आप 'आसरा मुक्तांगन' के परिवार में शामिल होना चाहते हैं?

'आसरा मुक्तांगन' की सदस्यता स्वीकार कर आप इस परिवार के सदस्य बन सकते हैं। भारत और नेपाल हेतु सदस्यता दरें-

एक प्रति:	30/-	वार्षिक सदस्यता:	350/-
त्रैवार्षिक सदस्यता:	1000/-	आजीवन सदस्यता:	6000/-

मानद संरक्षण: 1,00,000/-

(डाक/कूरियर 'आसरा मुक्तांगन' द्वारा वहन किया जाएगा)

(चेक ड्राफ्ट 'आसरा मुक्तांगन' के नाम से ही देय होंगे)

बैंक का नाम- Bank of India (Mumbai)

Ac No. : 030120110000055

IFSC : BKID0000301

'आसरा मुक्तांगन'

पोस्ट बैग नं.-1, कलवा, ठाणे-400605 (महाराष्ट्र)

Email : aasaramuktangan@gmail.com

Mobile : 8108400605 / 9029784346

मुंशी प्रेमचंद

नमक का दरोगा

प्रेमचंद का इंतकाल 1936 में यानी आज से 81 साल पहले हुआ था। जो भी लिखा 81 साल पहले ही लिखा। उस वक्त देश गुलाम था। अंग्रेजों का राज था। आजादी की लड़ाई तरह-तरह से लड़ी जा रही थी। आँखों में नया भारत बनाने का ख्वाब था। जाहिर है, उस वक्त की समाजी-सियासी जरूरत कुछ और ही रही होगी। चुनौतियाँ भी कुछ और रही होंगी। हाँ, इतना तो तय है कि उनकी लिखी बातें उस वक्त को समझने के लिए जरूर कारगर होंगी।

फिर हम आज प्रेमचंद की बातों को क्यों याद कर रहे हैं? उनकी बात आज के वक्त में हमारे समय की चुनौतियों से टकराने के लिए कैसे काम की हो सकती हैं? दुरुस्त बात है। मगर जब पिछले काम अधूरे छूटते जाते हैं, तो बार-बार सहारे के लिए, हालात समझने के लिए पीछे लौटना ही पड़ता है। आजादी के बाद हमने अनेक समाजी काम अधूरे छोड़े। इसलिए सत्तर साल बाद भी ऐसे ढेरों सवालों से हम हर रोज टकरा रहे हैं, जो सवाल मुल्क के सामने आजादी से पहले भी दरपेश थे

जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वर-प्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी-छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ-बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़कर लोग इस विभाग की बर्क-अंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था जब अँग्रेजी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और शृंगार रस के काव्य पढ़कर फारसीदां लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे। मुंशी वंशीधर भी जुलेखा की विरहकथा समाप्त करके मजनूँ और फरहाद के प्रेम-वृत्तांत को नल और नील की लड़ाई और अमेरिका के आविष्कार से अधिक महत्त्व की बातें समझते हुए रोजगार की खोज में निकले। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे- बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वे घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़ूँ। अब तुम्हीं घर के मालिक-मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती हैं, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर को देखो, उसके उपरांत जो उचित समझो, करो। गरज वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है। लेकिन बेगरज को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध

लो यह मेरी जन्म भर की कमाई है।

इस उपदेश के बाद पिताजी ने आशीर्वाद दिया। वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे। ये बातें ध्यान से सुनीं और तब घर से चल खड़े हुए। इस विस्तृत संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथ-प्रदर्शक और आत्मावलंबन ही अपना सहायक था। लेकिन अच्छे शगुन से चले थे, जाते ही जाते नमक विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गए। वेतन अच्छा और ऊपरी आय का तो ठिकाना ही न था। वृद्ध मुंशीजी को सुख-संवाद मिला, तो फूले न समाए। महाजन कुछ नर्म पड़े, कलवार की आशालता लहलहाई। पड़ोसियों के हृदय में शूल उठने लगे।

जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर को यहाँ आए अभी छह महीनों से अधिक न हुए थे, लेकिन इस थोड़े समय में ही उन्होंने अपनी कार्यकुशलता और उत्तम आचार से अफसरों को मोहित कर लिया था। अफसर लोग उन पर बहुत विश्वास करने लगे। नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बंद किए मीठी नींद सो रहे थे। अचानक आँख खुली तो नदी के प्रवाह की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया। उठ बैठे। इतनी रात गए गाड़ियाँ क्यों नदी के पार जाती हैं? अवश्य कुछ-न-कुछ गोलमाल है। तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया। वर्दी पहनी, तमंचा जेब में रखा और बात-की-बात में घोड़ा बढ़ाए हुए पुल पर आ पहुँचे। गाड़ियों की एक लंबी कतार पुल के पार जाती देखी। डाँटकर पूछा- किसकी गाड़ियाँ हैं।

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कुछ काना-फूसी हुई, तब आगे वाले ने कहा- पंडित अलोपीदीन की!

'कौन पंडित अलोपीदीन?'

'दातागंज के।'

मुंशी वंशीधर चौंके। पंडित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित जमींदार थे। लाखों रुपए का लेन-देन करते थे, इधर छोटे से बड़े कौन ऐसे थे जो उनके ऋणी न हों। व्यापार भी बड़ा लंबा-चौड़ा था। बड़े चलते-पुर्जे आदमी थे। अँग्रेज अफसर उनके इलाके में शिकार खेलने आते और उनके मेहमान होते। बारहों मास सदाव्रत चलता था।

मुंशी ने पूछा- गाड़ियाँ कहाँ जाएँगी? उत्तर मिला- कानपुर। लेकिन इस प्रश्न पर कि इनमें क्या है, सन्नाटा छा गया। दारोगा साहब का संदेह और भी बढ़ा। कुछ देर तक उत्तर की बाट देखकर वह जोर से बोले- क्या तुम सब गूँगे हो गए हो? हम पूछते हैं, इनमें क्या लदा है?

जब इस बार भी कोई उत्तर न मिला तो उन्होंने घोड़े को एक गाड़ी से मिलाकर बोरे को टटोला। भ्रम दूर हो गया। यह नमक के ढेले थे।

पंडित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार, कुछ सोते, कुछ जागते चले आते थे। अचानक कई गाड़ीवानों ने घबराए हुए आकर जगाया और बोले- महाराज! दारोगा ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुलाते हैं।

पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था। वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती हैं नचाती हैं। लेटे-ही-लेटे गर्व से बोले- चलो, हम आते हैं। यह कहकर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले- बाबूजी आशीर्वाद! कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गईं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा-दृष्टि रहनी चाहिए।

वंशीधर रुखाई से बोले- सरकारी हुक्म।

पंडित अलोपीदीन ने हँसकर कहा- हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें। मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था। वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नई उमंग थी। कड़ककर बोले- हम उन नमकहरामों में नहीं है जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते फिरते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। आपको कघयदे के अनुसार चालान होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलू सिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।

पंडित अलोपीदीन स्तंभित हो गए। गाड़ीवानों में हलचल मच गई। पंडितजी के जीवन में कदाचित यह पहला ही अवसर था कि पंडितजी को ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। बदलू सिंह आगे बढ़ा किंतु रोब के मारे यह साहस न हुआ कि उनका हाथ पकड़ सके। पंडित जी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। विचार किया कि यह अभी उद्दंड लड़का है। माया-मोह के जाल में अभी नहीं पड़ा। अल्हड़ है, झिझकता है। बहुत दीन-भाव से बोले- बाबू साहब, ऐसा न कीजिए, हम मिट जाएँगे। इज्जत धूल में मिल जाएगी। हमारा अपमान करने से आपके हाथ क्या आएगा। हम किसी तरह आपसे बाहर थोड़े ही हैं।

वंशीधर ने कठोर स्वर में कहा- हम ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते।

अलोपीदीन ने जिस सहारे को चट्टान समझ रखा था, वह पैरों के नीचे खिसकता हुआ मालूम हुआ। स्वाभिमान और धन-ऐश्वर्य की कड़ी चोट लगी। किंतु अभी तक धन की सांख्यिक शक्ति का पूरा भरोसा था। अपने मुख्तार से बोले- लाला जी, एक हजार के नोट बाबू साहब की भेंट करो, आप इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं।

वंशीधर ने गर्म होकर कहा- एक हजार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते।

धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव-दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुँझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछलकर आक्रमण करने शुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह और पंद्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किंतु धर्म अलौकिक वीरता के साथ बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा था।

अलोपीदीन निराश होकर बोले- अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।

वंशीधर ने अपने जमादार को ललकारा। बदलू सिंह मन में दारोगाजी को गालियाँ देता हुआ पंडित अलोपीदीन की ओर बढ़ा। पंडित जी घबराकर दो-तीन कदम पीछे हट गए। अत्यंत दीनता से बोले- बाबू साहब, ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिए, मैं पच्चीस हजार पर निपटारा करने का तैयार हूँ।

'असंभव बात है।'

'तीस हजार पर?'

'किसी तरह भी संभव नहीं।'

'क्या चालीस हजार पर भी नहीं।'

'चालीस हजार नहीं, चालीस लाख पर भी असंभव है।' बदलू सिंह, इस आदमी को हिरासत में ले लो। अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।'

धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला। अलोपीदीन ने एक हृष्ट-पुष्ट मनुष्य को हथकड़ियाँ लिए हुए अपनी तरफ आते देखा। चारों ओर निराश और कातर दृष्टि से देखने लगे। इसके बाद मूर्छित होकर गिर पड़े।

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सवेरे देखिए तो बालक-वृद्ध सबके मुँह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निंदा की बौछारें हो रही थीं, मानो संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरने वाले अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ और साहूकार, यह सब-के-सब देवताओं की भाँति गरदनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पंडित अलोपीदीन अभियुक्त होकर कॉन्स्टेबलों के साथ, हाथों में हथकड़ियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाए अदालत की तरफ चले, तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेलों में कदाचित आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

किंतु अदालत में पहुँचने की देर थी। पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने यह कर्म किया, बल्कि इसलिए कि वह कघनून के पंजे में कैसे आए? ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए? प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया।

वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे, किंतु लोभ से डाँवाडोल।

यहाँ तक कि मुंशीजी को न्याय भी अपनी ओर से कुछ खिंचा हुआ दीख पड़ता था। वह न्याय का दरबार था, परंतु उसके कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया हुआ था। किंतु पक्षपात और न्याय का क्या मेल? जहाँ पक्षपात हो, वहाँ न्याय की कल्पना नहीं की जा सकती। मुकध्दमा शीघ्र ही समाप्त हो गया। डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अपनी तजवीज में लिखा, पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध दिए गए प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं। वह एक बड़े भारी आदमी हैं। यह बात कल्पना के बाहर है कि उन्होंने थोड़े लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस किया हो। यद्यपि नमक के दारोगा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है, लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उसकी उद्दंडता और विचारहीनता के कारण एक भलेमानुस को कष्ट झेलना पड़ा। हम प्रसन्न हैं कि वह अपने काम में सजग और सचेत रहता है, किंतु नमक से मुकध्दमे की बढ़ी हुई नमकहलाली ने उसके विवेक और बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिए।

वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। पंडित अलोपीदीन मुस्कुराते हुए बाहर निकले। स्वजन-बाँधवों ने रुपए की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर उनके ऊपर व्यंग्यबाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक-झुककर सलाम किए। किंतु इस समय एक-एक कटुवाक्य, एक-एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्ज्वलित कर रहा था। कदाचित इस मुकदमे में सफल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लंबी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ, ढीले चोंगे एक भी सच्चे आदर का पात्र नहीं है।

वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्य-परायणता का दंड मिला। बेचारे भग्न हृदय, शोक और खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशी जी तो पहले ही से कुड़-बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था लेकिन इसने एक न सुनी। सब मनमानी करता है। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहाँ बस वही सूखी तनखवाह! हमने भी तो नौकरी की है, और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दिया जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरावस्था में घर पहुँचे और बूढ़े पिताजी ने समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले- जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ। बहुत देर तक पछता-पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कहीं और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाता तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्ध माता को भी दु:ख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने कई दिनों तक सीधे मुँह बात तक नहीं की।

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। बूढ़े मुंशीजी बैठे-बैठे राम नाम की माला जप रहे थे। इसी समय उनके द्वार पर सजा हुआ रथ आकर रुका। हरे और गुलाबी पर्दे, पछहिएँ बैलों की जोड़ी, उनकी गर्दनों में नीले धागे, सींग पीतल से जुड़े हुए। कई नौकर लाठियाँ कंधों पर रखे साथ थे। मुंशी जी अगवानी को दौड़े। देखा तो पंडित अलोपीदीन हैं। झुककर दंडवत की और लल्लो-चप्पो की बातें करने लगे, हमारा भाग्य उदय हुआ, जो आपके चरण इस द्वार पर आए। आप हमारे पूज्य देवता हैं, आपको कौन-सा मुँह दिखावें, मुँह में तो कालिख लगी हुई है। किंतु क्या करें, लड़का अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्यों मुँह छिपाना पड़ता? ईश्वर निस्संतान चाहे रखे, पर ऐसी संतान न दे।

अलोपीदीन ने कहा- नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिए।

मुंशी जी ने चकित होकर कहा- ऐसी संतान को और क्या कहूँ?

अलोपीदीन ने वात्सल्यपूर्ण स्वर में कहा- कुलतिलक और पुरुखों की कीर्ति उज्ज्वल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें?

पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा- दारोगा जी, इसे

खुशामद न समझिए, खुशामद करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की जरूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार-बल से अपनी हिरासत में लिया था, किंतु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूँ। मैंने हजारों रईस और अमीर देखें, हजारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा किंतु परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बनाकर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिए कि आपसे कुछ विनय करूँ।

वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा तो उठकर सत्कार किया किंतु स्वाभिमान सहित। समझ गए कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आए हैं। क्षमा-प्रार्थना की चेष्टा नहीं की, वरन् उन्हें अपने पिता की यह ठकुर-सुहाती की बात असह्य-सी प्रतीत हुई। पर पंडित जी की बातें सुनीं तो मन की मैल मिट गई। पंडितजी की ओर उड़ती हुई दृष्टि से देखा। सद्भाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सिर झुका दिया। शर्माते हुए बोले- यह आपकी उदारता है जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिए। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी, वह मेरे सिर-माथे पर।

अलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा- नदी तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं स्वीकार की थी किंतु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।

वंशीधर बोले- मैं किस योग्य हूँ, किंतु जो कुछ सेवा मुझसे हो सकती है, उसमें त्रुटि न होगी।

अलोपीदीन ने एक स्टांप लगा हुआ पत्र निकाला और उसे वंशीधर के सामने रखकर बोले- इस पद को स्वीकार कीजिए और अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। मैं ब्राह्मण हूँ, जब तक यह सवाल पूरा न कीजिएगा, द्वार से न हटूँगा।

मुंशी वंशीधर ने उस कागज को पढ़ा तो कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए। पंडित अलोपीदीन ने उनको अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किया था। छह हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़ा, रहने को बँगला, नौकर-चाकर मुफ्त। कंपित स्वर में बोले- पंडित जी, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी उदारता की प्रशंसा कर सकूँ। किंतु ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं हूँ।

अलोपीदीन हँसकर बोले- मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही जरूरत है।

वंशीधर ने गंभीर भाव से कहा- यूँ मैं आपका दास हूँ। आप जैसे कीर्तिवान, सज्जन पुरुष की सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। किंतु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह स्वभाव, जो इन त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान कार्य के लिए एक बड़े मर्मज्ञ अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले- न मुझे विद्वत्ता की चाह है, न अनुभव की, न मर्मज्ञता की, न कार्यकुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कघ्लम लीजिए, अधिक सोच-विचार न कीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला बेमुरौवत, उद्दंड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाए रखे!

वंशीधर की आँखें डबडबा आईं। हृदय के संकुचित पात्र में इतना एहसान न समा सका। एक बार फिर पंडितजी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और काँपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।

अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उन्हें गले लगा लिया।

❑❑❑

कहानी-

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

राष्ट्र के प्रति संकल्प

'मम्मी, मम्मी, कहाँ हो?' रोहन की चहकती आवाज घर भर में गुंजायमान हुई। किचन में कार्यरत नेहा ने सब्जी बनाते हुए कहा 'रोहन मैं किचन में हूँ। क्या बात है? इतना शोर क्यों मचा रहे हो?'

'मम्मी, तुम पहले ड्राइंगरूम में आओ। दादाजी-दादाजी आप भी अपने कमरे से यहाँ आईए। मुझे आप लोगों को गुडन्यूज बतानी है।'

रोहन के मुँह से 'गुडन्यूज' शब्द सुनकर सभी ड्राइंगरूम में इकट्ठा हुए और उनके मुँह से एक साथ हर्षभरा स्वर उभरा-कौन-सी गुडन्यूज?'

'मम्मी, दादा-दादी मेरा एनडीए में सिलेक्शन हो गया है।' रोहन ने प्रसन्नता से कहा और अपनी मम्मी के गले से लिपट गया।

'अरे वाह, यह तो वाकई में गुडन्यूज है।' तीनों ने एक साथ कहा। 'अरे बहू, रोहन का मुँह मिठाई से भर दो।' नेहा के ससुर ने कहा।

इधर नेहा ने गुडन्यूज सुनी और उसकी आँखें भर आई। उसे अपना संकल्प पूरा होते हुए दिखाई देने लगा। खुशी से उसने अपने बेटे को गले से लगाया और उसका माथा चूमते हुए कहा 'काँग्रेच्युलेशन। पापाजी, मैं अभी मिठाई लेकर आती हूँ।'

नेहा ने सबको मिठाई दी और उसका मन भूतकाल में मंडराने लगा।

'कारगिल में धमासान लड़ाई जारी है। 'ऑपरेशन विजय' के अन्तर्गत हमारे भारतीय जवानो दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए है।'

टीवी पर समाचार जारी है। नेहा की आँखें टीवी के छोटे पडदे पर गड़ी है। परंतु उसका मन कारगिल में लडने वाले अपने पति कैप्टन विशाल के पास जा पहुँचा। यादों के पंछियों ने चारों ओर से उसके मन को घेर लिया। तीन वर्ष पूर्व की तो बात है। 'सरिता' में 'वर-वधू' चाहिए कॉलम के अंतर्गत विशाल के बारे में फोटोसहित जानकारी छपी थी। नेहा के मम्मी पापा ने पत्राचार दवारा नेहा के रिश्ते की बात आगे बढाई। नेहा और विशाल एक कॅफे में मिले। एक दूसरे को जानने की कोशिश की दोनों ने इस रिश्ते के लिए हामी भरी। एक दिन बिना किसी तामझाम के बिना किसी तरह के दहेज के रजिस्टर मॅरेज सम्पन्न हुआ। नेहा के ससुरजी नौ सेना से कर्नल के पद पर अवकाश ग्रहण कर चुके हैं। उन्होंने सन 1962 तथा सन 1971 की लडाई में अपनी बहादुरी के झंडे गाड़ दिए थे। उन्हीं का जांबाज सुपुत्र विशाल पीछे कैसे रहता? और अब कारगिल की लड़ाई में अपने पिता की तरह जौहर दिखाने का अवसर मिला है।

नेहा के मन में यादों का कारवाँ आगे बढ़ा। उसे अपना कश्मीर में मनाया हनीमून याद आया। उन दिनों कश्मीर की घाटियों में शांति छा जाने से कई सालों बाद बड़ी तादाद में सैलानी आए थे। उन्होंने डलझील का एक 'शिकारा' बुक कर रखा था। नीचे बर्फ सा ठंडा पानी, सामने हिमालय के ऊँचे ऊँचे शिखर। बादल उन शिखरों तक पहुँच ही नहीं पा रहे थे। हवा में ठंडक और रात का सन्नाटा। विशाल की रसभरी बातों का सिलसिला चल निकला। उनकी

हँसी सन्नाटे को भेद रही थी। वह रात कितनी सुहानी, सुखद थी।

दूसरे दिन वे घूमने के लिए चल दिए। विशाल ने दो घोड़े लेने की बात की। नेहा को अकेले घोड़े पर बैठने से डर लग रहा था। विशाल कुशल घुड़सवार की तरह उछल कर घोड़े पर बैठा और उसने नेहा को अपने आगे बिठाया। नेहा के मन में ख्याल आया मानो वे राजपुताने में और एक वीर राजपूत योद्धा उसका वरण करके ले जा रहा है।

शादी के एक साल पश्चात उनका घर बच्चे की किलकारी से गुँजायमान हो उठा। उसके प्यार के पेड़ पर 'रोहन' नामक फूल खिल उठा। अब रोहन दो साल का हो चुका है। विशाल ने कारगिल की लड़ाई में जाते समय कहा था, 'देखो नेहा, हमारे खानदान में एक परंपरा है।'

नेहा ने उत्सुकतावंश पूछा, 'परंपरा? कौन-सी परंपरा?'

'नेहा, मेरे दादा, मेरे पिताजी इतना ही नहीं मेरे चाचाजी भी फौजी हैं। उन्होंने अपना जीवन अपने देश की सुरक्षा में न्यौछावर कर दिया। मेरी मनोकामना है कि हमारे खानदान की परंपरा को अपना बेटा रोहन भी निभाए।'

आज रोहन ने गुडन्यूज देकर विशाल का सपना साकार कर दिया। नेहा ने रोहन से कहा, एनडीए ने तुम्हारा सिलेक्शन हो गया, यह अच्छी बात है। परंतु तुम्हें कठोर परिश्रम से बचना नहीं चाहिए। जितना तुम पसीना बहाओगे उतना ही तुम्हारा खून नहीं बहेगा।'

'सही कहा तुमने बहू, माय सन, मेहनत से पीछे नहीं हटना।' कर्नल साहब ने कहा।

नेहा का मन अतीत के पन्ने पलटने लगा। यादों के पंछी आसमान छूने लगे।

एक दिन विशाल का खत आया। डाकिए के हाथ से नेहा ने बाज पंछी की तरह खत पर झपट्टा मारा। अपने कमरे में जाकर धीरे से लिफाफा खोलकर पढ़ना शुरू किया।

नेहा डार्लिंग, ढेर सारा प्यार।

यहाँ कारगिल में जोरदार लड़ाई छिड़ी है। 'ऑपरेशन विजय' के तहत हम दुशमनों को खदेड़ने के लिए जुटे हुए हैं। यहाँ दोनो तरफ से गोलाबारी हो रही है। ऐसा लगता हैं मानो दिवाली हो। हमने कारगिल की चोटियों को तीनों ओर से घेर रखा है। एक तरफ से अठारह ग्रेनेडिअर्स, दूसरी ओर

से नागा और तीसरी और से आठ सिख बटालियन्स ने मोर्चा सँभाल रखा है। हमने बोफोर्स तोपों द्वारा दुश्मनों के बंकरों नेस्तनाबूत कर दिया है। अपनी सेना ने 12-13 जून को 'तोलोलिंग' पर कब्जा कर दुश्मनों को पीछे खदेड़ा, 18 जून को पाँइट 5140 पर तिरंगा फहराकर 'टायगर हिल्स' की ओर आगे बढ़े। दुश्मनों के छक्के, उन्हें मौत की नींद सुलाकर अब हमारे विजयी कदम 'बटालिक सेक्टर' की ओर बढ़ा रहे हैं।

नेहा, तुम्हे पता नहीं, हमें यहाँ किन-किन मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है, दिन के उजाले बोफोर्स तोपों द्वारा हम नीचे से गोलाकारी करते हैं, और रात में खराब मौसम के होते हुए आगे बढ़ते हैं, उस समय सनसनाती सर्द हवा हमारे साथ साथ चलती है, तापमान शून्य से नीचे पाँच और ग्यारह डिग्री सेंटीग्रेट के बीच होता है, बर्फीले इलाके के युद्ध में दक्ष हम फौजियों को सोलह हजार फीट ऊँची चोटी पर चढ़ने के लिए ग्यारह घंटे लगते हैं।

पत्र पढ़ते समय नेहा के रोंगटे खडे हो गए। उसकी आँखों के सामने दुश्मनों के साथ लड़ते हुए सैनिकों का दृश्य साकार हो उठा। उसने उत्सुकतावश आगे खत पढ़ना आरंभ किया।

नेहा, यहाँ हर जवान के पास 25 किलो से ज्यादा वजन है जिसे लेकर केवल पाँच मीटर चलकर ही हम हांफने लगते हैं, क्योंकि यहाँ चढाई के साथ साथ ऑक्सीजन की भी कमी है। उठाया गया एक-एक ग्राम वजन अतिरिक्त बोझ सा लगता है। रसद या गोला बारूद में से किसी एक को चुनना पड़ता है। मैं दो किलो का खाने का पैकेट उठाने के बजाए सौ गोलियाँ उठाना बेहतर समझता हूँ। तुम्हारे हाथ का बना गर्म-गर्म खाना याद करता हूँ और मेरा पेट अनायास भर जाता है।

नेहा, 'द्रास' के आसपास के शिखर कब्जे में लेने के लिए वायुसेना ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। वायुसेना के सामने भी यहाँ की दुर्गम पहाड़ियाँ और खराब मौसम की अड़चनें हैं। दुश्मनों के ठिकानों का पता लगाने के लिए हेलिकॉप्टर द्वारा सर्वे किया जाता है। उधर शिखर पर छुपे बैठे दुश्मनों ने हमारा एक हेलिकॉप्टर उड़ा दिया। यह देखकर हेलिकॉप्टर पर्वत शिखरों के बीच जवानों से ट्रान्समीटर द्वारा संपर्क स्थापित करते हैं। थलसेना के बोफोर्स गनर ने जहाँ गोले दागे हैं, वह स्थान तथा अब आगे उन्हें कहाँ गोलाबारी करनी

है? ये सारा प्लान वे बताते हैं। अच्छा अब पत्र लेखन समाप्त करने की इजाजत दो। लड़ाई जल्द खत्म होने के आसार हैं। हम जल्द ही मिलेंगे। तुम्हारा विशाल।

नेहा ने विशाल के पत्र को अपने सीने से लगा लिया मानो विशाल से गले मिल रही हो। यादों के पंछियों ने फिर उड़ान भरी । एक दिन विशाल ने उसे बताया था कि देहरादून के आय. एम. ए. से हरेक

प्रशिक्षणार्थी अधिकारी पासिंग आऊट परेड के अंत में 'चेटवुड हॉल' में आते है। वहाँ के संगमरमर के चबूतरे पर निम्नांकित अक्षर अंकित है 'तेरे राष्ट्र की सुरक्षा, सन्मान और हित सब से पहले, तेरे जवानों का सम्मान हित और आराम बाद में, तेरी स्वयं की सुविधाएँ और बचाव सब से आखिर में!'

कुछ दिन और बीते। नेहा का मन किसी भी काम में रमने के लिए तैयार न हुआ। रह रहकर उसके मन पर आशंका का साँप कुडली मारकर बैठ जाता। उसे बार-बार विशाल की याद सताने लगी। पता नहीं विशाल किस हाल में होगा। उसकी बैचेनी को उसके ससुर ने भाँपा और पूछा 'नेहा, क्या बात है, तुम कुछ परेशान लग रही हो?'

नेहा ने अपनी बेचैनी को छुपाते हुए कहा, 'नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।'

'नेहा, मैं जानता हूँ कि तुम्हें विशाल की चिंता खाए जा रही है। इसमें परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं।

हमारी फौज जान पर खेलती है, तभी सारा देश निश्चिंत होता है। सेना के साथ हम ही नहीं पूरा देश मॉरल सपोर्ट देने के लिए एकजुट होकर खड़ा है। 'ऑपरेशन विजय' की वजह से अपने देश के लोगों में प्रखर राष्ट्रभक्ति की लौ प्रज्ज्वलित हुई है। तुम अखबार पढ़ती हो इसलिए तुम्हें ज्ञात होगा कि फौजियों के लिए स्थान स्थान पर रक्तदान शिबिरों का आयोजना रहा है।' कर्नल साहब ने कहा।

'पापा, मैं भी रक्तदान कर सकता हूं', कर्नल साहब ने उत्साह के साथ कहा- 'बहुत खूब तुम्हारे साथ मैं भी रक्तदान करूँगा। इन बूढ़ी रगों में अभी भी बहुत खून है। सब तुम चिंता छोड़ो, समाचार का समय हो गया है। लड़ाई संबंधी ताजा खबरें देखें।'

उसकी गंभीरता याद आते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसकी सास की रोते हुए हिचकियाँ शुरु हो गई। उस अफसर ने कहा, 'कैप्टन विशाल का पार्थिव शरीर हवाई जहाज से भेजा है आज शाम तक आ जाएगा।'

दूसरे दिन अखबारों में हेड लाईन के साथ कैप्टन विशाल के शहादत की खबर छपी। रेडियो और टीवी से इस संदर्भ में समाचार प्रसारित किए गए। पूरे शासकीय सम्मान के साथ कैप्टन विशाल की अंत्योष्टि की गई। विशाल की अंतिम यात्रा में मानो पूरा शहर उमड़ आया।

घर भर में शांति छा गई। यंत्रवत सारे काम होने लगे। नेहा ने अपने कलेजे पर पत्थर रखकर रोहन की देखभाल शुरु की।

कुछ महीने पश्चात दिल्ली से खत आया। कैप्टन विशाल को मरणोपरांत अशोक चक्र' प्रदान करने की घोषणा हुई । नियत दिन पर नेहा सफेद साड़ी पहनकर 'अशोक चक्र' लेने मंच पर गई। भीड में रोहन अपने दादा-दादी के साथ बैठा था। नेहा खयालों की दुनिया में खो गई। एक दिन विशाल ने उससे कहा था, 'नेहा, मुझे सफेद रंग पसंद नहीं, मुझे कलरफुल कपड़े पसंद आते हैं। तुम कभी सफेद रंग की सलवार कमीज नहीं पहनना।' और उसे सफेद साड़ी पहननी पड़ी।

कुछ दिन पश्चात घर में महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। कर्नल साहब ने धीरे गंभीर स्वर में नेहा से कहा, 'नेहा, हमने सोच समझकर यह फैसला लिया है कि तुम्हारी

दूसरी शादी कर दी जाए। तुम्हारे सामने सारी जिंदगी पड़ी है। हम बूढ़े हो चुके हैं। हम कालवृक्ष पर से पके फल की तरह न जाने कब टपक जाएं। इस फैसले के बारे में हम तुम्हारी राय जानना चाहते हैं।'

नेहा उनकी बात सुनकर चौंक उठी। कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात एक एक शब्द पर जोर देते हुए उसने कहा, 'पापा-मम्मी, क्या मैं आप पर बोझ बन गई हूँ। विशाल के जाते ही आप मुझे घर से भगा देना चाहते हैं। नहीं, मुझे आपका फैसला मंजूर नहीं। दूसरी बात यह है कि मैं 'अशोक चक्र' प्राप्त शहीद की विधवा बन कर जीवन भर रहना पसंद करूंगी, परंतु अन्य किसी से दोबारा शादी नहीं करूँगी। मेरे पति विशाल का सपना है कि रोहन जब बड़ा होगा तो वह अपने खानदान की परंपरा निभाने के लिए फौज में भर्ती हो। मुझे अपने पति का अधूरा सपना साकार करना है। मैं अब आपकी बहू नहीं बेटी बनकर परिवार की सारी जिम्मेदारी निभाऊंगी। मैं भी देश के किसी काम आ सकूँ इसके लिए वायुसेना में भर्ती होना चाहती हूँ। आप लोग मेरे इस संकल्प को पूरा करने के लिए आशीर्वाद प्रदान करें।'

'माँ, मिठाई दो न कब से मिठाई का डिब्बा लिए तुम चुपचाप खयालों की दुनिया में खो चुकी हो।' रोहन की बात सुनकर नेहा अतीत से वर्तमान में आ गई। उसकी आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे।

❑❑❑

अनुसंधान-

विजय गर्ग

ऋतुओं का राजा वसंत

सब ऋतुओं के अपने-अपने रंग, अपना-अपना राग, इसका धार्मिक और प्राकृतिक महत्व है। फिर भी वसंत ऋतु के ठाठ ही कुछ निराले हैं। यह प्रेम की ऋतु है, मधुर श्रृंगार की वेला वसंत में ही आती है। मुक्त समीकरण में मादकता घुलने लगती है, बौराए हुए आम की शाखा पर कोकिल युगल के सुरों में डूबने के लिए कामदेव फूलों के कोमल तीर चलाते हुए चले आते हैं। मयूर अपनी प्रेयसियों को नाच-नाचकर रिझाने लग जाते हैं। मधुवन में बहार सी आ जाती है और किंशुक केसरिया लिबास में खड़ा हुआ सबका ध्यान अपनी ओर खींचकर मन ही मन मुग्ध होने लगता है। वसंत आते ही प्रकृति का तेज और ओज बढ़ जाता है। श्वेतकमल पर विराजित शुभ्रवस्त्रावृता सरस्वती की पूजा में झूमती हुई शीतल-मंद-सुगंधित पवन जन-जीवन को उल्लास से भर देती है। फूलों से लदी डालियां, फूली हुई सरसों, लहलहाते खेत, परागकणों को चूमती हुई तितलियां देख मन बौराने लगता है। उमंग से भरा हुआ मन कभी कलाकार बनने के लिए उछलता है तो कभी कोई मधुर गीत गुनगुनाने लगता है।

मां सरस्वती हमारे जीवन में एक व्यवस्थापिका की तरह आती हैं। वह आकर हमें उस रंगशाला में ले जाती हैं जहां आम्रमंजरियां, किंशुक के फूल और गेहूं की बालियां हाथों में लेकर खड़ी कुमारियां वसंतोत्सव में मगन हैं। जहां नववधुओं के जूड़े महकने लगते हैं, नवमल्लिका की खिली हुई कलियों के गजरे इतराने लगते हैं। नई-नई कोंपले फूट रही होती हैं। कुहू-कुहू से दिशाएं गूंजने लगती हैं। नव-सृजन के उत्सव का आमंत्रण पाकर कवि का चित्त जाग जाता है। मृदंग की थाप पर तरुणाई थिरकने लगती है, चितेरे के हाथ में आकर तूलिका मचलने लग जाती है, नर्तकियों के चितवन में मृगनयनों का बांकापन उतर आता है, गायक के कंठ में कोई गंधर्व आकर बैठ जाता है और प्रियतम की बांहों में झूलने के लिए मुग्धा नायिका मचल उठती है।

वसंत ऋतुओं का राजा अवश्य है, किंतु वह तानाशाह नहीं है। उसे अपनी शान बघारना नहीं आता। उसे शायद यह पता भी नहीं कि वह दूसरी ऋतुओं से क्यों महान है? वह राजा भी है और फकीर भी। वह साधु की झोली भी है और वनिताओं का श्रृंगार भी। वह एक साथ केसर, चंदन, केतकी और गुलाब है। वह कोमल धूप भी है और स्वच्छ चांदनी भी है। वह एक साथ मधु, शर्करा, घृत और निर्मल जल है। वह हल्का सा स्पर्श देकर निहाल कर देता है। वह अपने में सुगंध भरकर निकलता है। अमीर की अमीरी नहीं देखता, गरीब की गरीबी नहीं देखता।

सब पर बराबरी से अपना खजाना लुटाता हुआ अदृश्य हो जाता है। वसंत की सुकुमारता और उसके बड़े ही खूबसूरत अंदाज पर न्योछावर होने के लिए बच्चों से लेकर वयोवृद्ध तक समान रूप से स्पर्धा करते दिखते हैं। सो, अपने भीतर वसंत को उतरने दीजिए। वह आपको प्रेम की उस सुगंध से भर देगा, जो वीणावादिनी को प्रिय है। ये तीनों जब आपके हृदय में आसन जमा लेंगे, तो एक झंकार उठेगी। तब आप कह उठेंगे- 'अहा! यह कितना मधुर जीवन' और अपने रंगों की दुनिया में खो जाएंगे।

स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

❑❑❑

सुरक्षा कटियार

शेर और खरगोश की कहानी

एक जंगल में एक घमंडी व शैतान शेर रहता था और वह खुद को जंगल का राजा कहता था। वह शैतान शेर रोजाना जंगल के जानवरों को मारता था ताकि वह उन्हें खा सके। यह देखकर जंगल के सभी जानवर डरे हुए और चिंतित थे। जंगल के सभी जानवर सोचने लगे कि यदि वह घमंडी शेर लगातार ऐसा करता रहेगा तो जंगल में एक भी जानवर नहीं बचेगा। इसलिए सभी जानवरों ने शेर से कहा कि वह जंगल के सभी जानवरों को ऐसे न मारे। उन्होंने कहा कि हर दिन वे एक जानवर उसकी गुफा में भेज देंगे ताकि सभी जानवर निश्चिंत होकर रह सकें और ऐसे में शेर को शिकार भी नहीं करना पड़ेगा। शेर को यह योजना बहुत अच्छी लगी। इस तरह से उस दिन के लिए बाकी के जानवर शांति से रहने लगे और एक-एक करके बाकी के जानवर उस शैतान शेर का भोजन बनने लगे। बेचारे जानवर करते भी क्या? ऐसा कई दिनों तक चलता रहा। एक दिन एक चालाक खरगोश की बारी आई और उसे भी जबरदस्ती शेर के पास जाना पड़ा। खरगोश ने सोच लिया था कि वह उस शेर का अंत कर देगा। इसलिए उस खरगोश ने जंगल का लंबा रास्ता अपनाया और शेर तक बहुत देरी से पहुँचा।

भूखा शेर गुस्से में लाल था और उसने दहाड़ते हुए खरगोश से पूछा कि वह देर से क्यों आया है। खरगोश ने कहा कि उसे देर इसलिए हो गई क्योंकि रास्ते में उसके पीछे एक खूंखार सा शेर पीछे पड़ गया था और उसे खा जाना चाहता था। खरगोश ने यह भी कहा कि वह शेर खुद को जंगल का राजा कहता है। जब भूखे शेर ने यह बात सुनी तो उसे बहुत गुस्सा आया। भूखे शेर ने खरगोश से पूछा कि वह दूसरा शेर कहाँ था। तब खरगोश भूखे शेर को एक कुएं के पास लाया और कुएं की तरफ इशारा करते हुए कहा कि वह दूसरा शेर इसके अंदर है।

जब भूखे शेर ने कुएं में देखा तो उसे पानी में अपनी ही छवि दिखाई दी पर भूखे शेर ने सोचा कि यही वह शेर है जो खुद को जंगल का राजा कहता है। शेर ने गुस्से में दहाड़ा तो उसकी छवि भी उसके जैसा कर रही थी। यह देखकर भूखे शेर को और ज्यादा गुस्सा आ गया और वह बिना कुछ सोचे समझे दूसरे शेर को मारने के लिए कुएं में कूद गया। उसे लगा कि वह उस शेर को मार देगा पर कुएं में तो सिर्फ उसकी छवि ही थी और इस प्रकार से अपनी ही बेवकूफी के कारण शेर मर गया। इस कहानी से यह सीख मिलती है कि शारीरिक बल से ज्यादा बुद्धि होना जरूरी है।

❑❑❑

शिक्षा-

न्यायमूर्ति अनंत माने
(सेवानिवृत्त)

जानने-समझने-अमल करने के लिए शिक्षा निहायत जरूरी

• अज्ञान, अशिक्षा और निरक्षरता, मानव अधिकारों के लिए एक निरंतर खतरा है। इससे पनपता है भेदभाव, असहिष्णुता और पूर्वाग्रह।

• अगर हम मानव अधिकारों के बारे में गंभीर हैं तो इनके सभी रूपों की सही जानकारी होनी चाहिये। इसका सबसे अच्छा तरीका है शिक्षा-शिक्षा के माध्यम से मानव अधिकार को जानना-समझना।

• शिक्षा अज्ञान की प्राकृतिक दुश्मन है। यह समझ, करुणा और सहिष्णुता को बढ़ावा देती है। यह व्यवहार परिवर्तित करती है। व्यक्ति की मानसिकता को सुधारती है। शिक्षा मानव अधिकारों के प्रति सही और अनंत सम्मान पैदा करती है।

• शिक्षा किसी भी दंडात्मक या कानूनी शासन की तुलना में मानवधिकार को बहुत अधिक प्रभावी ढंग से संरक्षण देती है।

• बैठे-बिठाये अज्ञान की निंदा करना आसान है। ऊंची आवाज में शिक्षा की गुणवत्ता की तारीफ करना भी आसान है, लेकिन जरूरी है अधिक से अधिक प्रभावी तथा व्यावहारिकता के साथ मानवधिकारों का समर्थन-संरक्षण। हमें अज्ञान के खिलाफ संघर्ष करना होगा और जिन मानव अधिकारों को हम इतना जरूरी और मूल्यवान मानते हैं, उन्हें व्यावहारिक स्तर पर लागू करना होगा। मानव अधिकार शिक्षा ज्यादा महत्वपूर्ण है। यह एक सकारात्मक पहल है। इससे मानव अधिकारों को बढ़ावा देने में शिक्षा की शक्ति का वास्तविक उपयोग होगा।

• सरकार मानव अधिकार शिक्षा को बहुत गंभीरता से लेती है और इसे जितनी जल्दी लागू कर पाये, लागू करने की कोशिश करती है।

• मानव अधिकार सभी मनुष्यों के जीवन, स्वतंत्रता और गरिमा की रक्षा करते हैं।

• मानव अधिकार कोई अमूर्त अवधारणा नहीं है।

• यह हम सभी का कर्तव्य है कि इन अधिकारों को सुनिश्चित, संरक्षित करने के लिए हम काम करें।

• हमें मानव अधिकारों से नजरें नहीं फेरनी चाहिये। इससे अज्ञान को बढ़ावा मिलेगा।

• हमें शिक्षा के माध्यम से समझदारी बढ़ाने के काम में शामिल हो जाना चाहिये। इससे अंधकार दूर होगा, प्रकाश फैलेगा, अज्ञानता दूर होगी। ज्ञान फैलेगा। हमें नयी राह मिलेगी। जो अब तक नहीं हुआ वह अब होगा। हमें कर्तव्य और ज्ञान का वह उपाय वह रास्ता मिलेगा, जिससे मनुष्य द्वारा मनुष्य के साथ किया जानेवाला हर अमानवीय अन्याय दूर किया जा सकेगा। ऊंची जाति नहीं, ऊंचा वर्ग नहीं, कोई बड़ा कोई छोटा नहीं। सभी एक समान, सभी बराबर। जैसे सब वैसा ही मैं। कोई भी पैदाइशी अस्पृश्य नहीं।

अंधेरी, मुंबई

❑❑❑

हृषिकेश शरण

कुशल लेखक
लोकप्रिय वक्ता
बौद्ध साहित्य विशेषज्ञ
बुद्ध का जीवन एवं शिक्षा
होलिस्टिक मैनेजमेंट सहित
विविध विषयों पर
देश विदेश में व्याख्यान।
एडविन ऑरनल्ड की पुस्तक
'द लाइट ऑफ एशिया'
का हिन्दी अनुवाद।
भूतपूर्व लोकपाल।

थेर छन्न की कथा

उत्तम पुरुषों की संगति कल्याणकारी होती है

थेर छन्न राजकुमार सिद्धार्थ से उनके बचपन से ही परिचित था। जब उन्होंने घर छोड़ा तो कंटक घोड़े पर उनके साथ अनामा नदी तक आया। इससे पूर्व भी जब-जब सिद्धार्थ नगर में भ्रमण के...लिए निकले, छन्न उनके साथ था। राजकुमार ने बूढ़ा आदमी देखा तो छन्न से पूछा कि क्या सभी की यही नियति है। छन्न ने उन्हें बताया कि सभी के साथ यही होगा अगर व्यक्ति उतनी उम्र तक जीवित रह पायेगा। एक बीमार और मृत व्यक्ति को देखने के बाद भी सिद्धार्थ ने छन्न से ऐसे ही प्रश्न किए और उसने इसी प्रकार का उत्तर देकर उन्हें समझाया।

महाभिनिष्क्रमण के बाद छः वर्षों की सतत् तपस्या के पश्चात् फल्गु नदी के किनारे बोधि वृक्ष के नीचे राजकुमार सिद्धार्थ से बुद्ध हो गए। उन्होंने सत्य-दर्शन और ज्ञान-प्राप्ति को अपने आप तक सीमित नहीं रखा वरन् सभी के साथ बाँटना प्रारंभ किया। पहले सारनाथ गए और वहाँ पंचभिक्षुओं को प्रव्रजित किया। उसके बाद लोगों में बुद्ध का उपदेश सुनने तथा उनके धर्म और संघ में प्रवेश करने की होड़ लग गई। बुद्ध के अनेक शिष्य हुए जो साधना की ऊँचाइयों को छू गए जैसे सारिपुत्त, महामोग्गलान, काश्यप, आनन्द आदि। अपनी साधना के कारण वे बुद्ध की कृपादृष्टि के पात्र हुए और उनके नजदीकी भी, लेकिन छन्न यह सब देखकर जलता था। वह कहता, 'जब शास्ता ने महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग) किया था। उस समय मैं अकेला उनके साथ था और तब से मैं ही उनके साथ रहा हूँ।' आज जो नए-नए भिक्षु आ गए है वे कहते हैं, 'मैं मोग्गलान हूँ', 'मैं सारिपुत्त हूँ' आदि। ऐसा कहकर वह इन भिक्षुओं की निंदा किया करता था। तथागत को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने छन्न को बुलाकर ऐसा करने से मना किया। उस समय तो वह चुप हो गया पर बाद में फिर निंदा करनी शुरू कर दी। तब बुद्ध ने तीन बार छन्न को बुलाकर सलाह दी, 'छन्न! सारिपुत्त और मोग्गलान दोनों ही तुम्हारे हितैषी हैं। ये दोनों ही पूजनीय पुरुष है। तुम्हें इनकी निंदा नहीं करनी चाहिए। वरन् तुम्हें उनकी सेवा करनी चाहिए।' छन्न ने इतना होने पर भी अपनी आदत नहीं छोड़ी। अन्त में शाक्य मुनि ने सभी भिक्षुओं को बुलाकर कहा, 'भिक्षुओं! मेरे जीवित रहने तक छन्न को कोई भी नहीं समझा पाएगा। मेरे परिनिर्वाण के बाद ही उसे समझ आयेगी।' परिनिर्वाण के समय आनन्द ने शास्ता से पूछा, 'भन्ते! छन्न को क्या दंड दिया जाना चाहिए?' 'ब्रह्मदंड', बुद्ध का उत्तर था।

शास्ता परिनिर्वाण को प्राप्त हो गए। स्थविर आनन्द ने छन्न को शास्ता का आदेश बता दिया कि उसे ब्रह्मदंड मिला था। यह सुनकर छन्न तीन बार मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़ा तथा भन्ते आनन्द के चरणों में गिर पड़ा, 'भन्ते। इतना कठोर दंड देकर मेरा अंत मत कीजिए।' उसके बाद वह स्थविरों के प्रति श्रद्धा और सम्मान से पेश आने लगा और कुछ ही दिनों में अर्हत्व प्राप्त कर गया।

द्वारका, नई दिल्ली

❑❑❑

अध्यात्म-

पवित्रा सावंत

कुशल वक्ता, जीवन प्रक्षिशक
'प्रकृति के रहस्य' पुस्तक प्रकाशित।
कार्यकारी संपादक-
'आसरा मुक्तांगन'

जीवन : एक आध्यात्मिक बाग

हमारा जीवन पार्क, गार्डन, बाग-बगीचे से कम नहीं है। हम भी कुदरत के हिस्से हैं और बीचा (पेड़-पौधे-फूल) भी कुदरत का ही हिस्सा है। जिस तरह बगीचे और बाग में मौसम के अनुसार पतझड़ भी होता है। फूल भी खिलते हैं। नये पौधे जन्म लेते हैं। कुछ फल सूखकर (बीज बनकर) जमीन पर पड़े रहते हैं। उसी तरह हमारे जीवन में भी हालात के अनुसार कभी हार तो कभी जीत होती है। लोग भी मिलते हैं. ..नयी पहचान भी होती है और कुछ हमसे रूठ भी जाते हैं, रूठे हुए लोग दोबारा मिलते भी है जैसे सूखे फल के बीज दोबारा पौधा बनते हैं।

हमें इस जीवन को हर खुशहाल बनाना है तो हमें अध्यात्मिक बनना होगा। अध्यात्म के बारे में बहुत से लोग पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं। अध्यात्म अध्ययन भी है और एक सर्व शक्तिशाली इंसान बनने की प्रेरणा भी है। शक्ति का यह मतलब नहीं कि किसी के साथ लड़ने और जीतने पर स्वयं को शक्तिशाली समझ बैठे। अध्यात्मिक शक्ति में केवल स्वयं से लड़ना होता है। लेकिन वह बिल्कुल लड़ाई की तरह नहीं, बल्कि सामना करने की क्रिया होती है। अध्यात्म का सारांश है कि जो स्वयं को जीतता है वही संपूर्ण विजेता है।

विजेता बनना मतलब स्वयं पर जीत (को) हासिल करना है। मगर यहां लड़ाई की बिल्कुल जरूरत नहीं पड़ती है। सच्ची शक्ति का मतलब है दूसरे लोगों के साथ तालमेल बनाये रखना और सबकी भलाई के लिए काम करना। कुछ बातें तो हम अब तग समझ पाये, लेकिन एक और सच्चाई यह है कि जैसे ही अध्यात्म शब्द सुनने को मिलता है, वैसे ही हम उसे धर्म के साथ जोड़ देते हैं। मगर ऐसा कुछ भी नहीं है। एक सच्चाई और भी है अध्यात्म धर्म के साथ ही हो सकता है। इसके साथ एक सच्चाई यह भी है कि धर्म हमेशा अध्यात्म के साथ ही रहता है।

लेकिन धर्म-अध्यात्म नहीं है और अध्यात्म धर्म नहीं है। यहां ज्यादा कन्फ्यूजन होने की जरूरत नहीं है। यह वाक्य इस सच्चाई को स्पष्ट करता है कि जो इंसान चाहता है, उस धर्म के साथ अध्यात्म नहीं है। यह वाक्य इस सच्चाई को स्पष्ट करता है कि जो इंसान चाहता है, उस धर्म के साथ अध्यात्म नहीं हो सकता। क्योंकि अध्यात्म केवल ईश्वरीय धर्म के साथ ही हो सकता हैं अब हमारे मस्तिष्क में अनगिनत सवाल उठते हैं। सबका सारांश यही होता है कि हम तो ईश्वरीय धर्म के साथ हैं- तो अध्यात्म भी होना चाहिये वैसे हम आध्यात्मिक भी हैं।

इस तरह की बातें तो हर धार्मिक कहता है। सबसे बड़ी आपत्ति है कि आदमी जिस धर्म को चाहता है...उसे सबसे उत्तम धर्म मानता है। इस कन्फ्यूजन को खत्म करने के लिए सिर्फ इतना कहना काफी है कि अध्यात्म और धर्म एक साथ हैं। धर्म आध्यात्मिक राह है और अध्यात्म धार्मिक ताकत है। यहां केवल धर्म की बात कही जा रही है। धर्मों के बारे में नहीं। खुलासा यह है कि अक्सर इंसान धर्मों के बीच उलझा रहा है। इतने सारे धर्मों को अध्यात्म झेल नहीं सकता। अध्यात्म के लिए केवल एक ही धर्म पर्याप्त है और वह एक ध

र्म को अपने साथ जोड़ता है (जोड़ना चाहता है), फिर हमारे पास है अनगिनत सवाल! इनका सीधा जवाब है कि अध्यात्म व्यक्ति के धर्म पर विश्वास नहीं करता है, न कि व्यक्ति से प्रलोभित धार्मिक रीति रिवाजों पर विश्वास करता है। अध्यात्म तो केवल ईश्वर पर विश्वास और सृष्टि से ईमानदारी पर ही विश्वास करता है।

ईश्वर चाहता है कि मानव उस तक पहुंचने का एक उत्तम मार्ग चुनें। उसी मार्ग का नाम है। आध्यात्मिकता। इंसान का मानना है कि इंसान भी सृष्टि का ही एक हिस्सा है। अध्यात्म के लिए श्रद्धा और भक्ति की जरूरत है। श्रद्धा और भक्ति से विशेष विश्वास उत्पन्न होता है। उसी विश्वास का दूसरा नाम है अध्यात्म और ईश्वर! इतना कुछ होने के बाद धर्म का नाम आता है। अध्यात्म-श्रद्धा-भक्ति और विश्वास के बीच जो द्वीप है उसे हम धर्म कह सकते हैं। याने हमें अध्यात्म-भक्ति-श्रद्धा और विश्वास के बीच जीना है। ऐसा करने से ही हम धर्म में रह सकते हैं। क्या हम अपने आप से कुछ सवाल कर लें?

हम जिसे धर्म मानते हैं- क्या उसमें विश्वास नहीं है?
हम जिसे धर्म कहते हैं- क्या उसमें भक्ति नहीं है?
हम जिस धर्म पर चलते हैं- क्या उसमें श्रद्धा नहीं है?
हम जिस धर्म को अपनाते हैं- क्या उसमें अध्यात्म है?
धर्म बुनियाद नहीं है, धर्म है रिजल्ट- परिणाम!
धर्म बीज नहीं है, धर्म है फल-फूल!
धर्म पेड़ नहीं है, केवल शाखा है!

अगर धर्म विश्वास है...तो उसके फल विश्वसनीय होंगे। अगर धर्म श्रद्धा है, तो उसका पेड़ श्रद्धा का प्रतिरूप होगा। अगर धर्म शक्ति है, तो उसकी विशाल छांव भक्ति की परछाईं होगी। और इसका बीज आध्यात्म है। जब तक आप अध्यात्म नामक बीज को नहीं बोयेंगे तब तक धर्म नामक वृक्ष श्रद्धा-भक्ति और विश्वास के साथ हराभरा रह नहीं सकता है। धार्मिक बनने का सीधा अर्थ आध्यात्मिकता ही होता है। लेकिन आध्यात्मिक बनने के बाद धार्मिक बनने की शर्त होगी। क्योंकि आध्यात्मिकता से धर्म है। धर्म से आध्यात्मिकता नहीं है। धर्म को बीज मत बनाओ...आध्यात्मिकता को बीज बनाओ!

हम आध्यात्मिकता का बीज बोते हैं तो धर्म हमेशा हरियाली से संपन्न रहेगा। अगर हम धर्म का बीज बोते हैं तो हम भटक सकते हैं। धर्म के बीज से उत्पन्न होनेवाला पौधा अपनापन से पनपता है। जब वह पेड़ बनता है तब वह स्वयं पेड़ बनता है। तब वह स्वार्थ और अहंकार से फैल जाता है। उस धर्म के साथ उत्पन्न होनेवाली हर चीज हमें कहीं न कही सच्ची राह (इंसानियत) से गुमराह कर सकती है। उसकी कलियां भेद-भाव की होती है। उसके फूल दूसरे के मुरझाने पर खिलते हैं।...उसके फल कट्टरवाद से हमें जोड़ते हैं। आध्यात्मिक बीज से जो पौधा उत्पन्न होगा वह श्रद्धा का होगा। श्रद्धा से बढ़नेवाला पेड़ भक्ति का होगा। भक्ति के पेड़ की हर एक कली फूल-फल विश्वास के होंगे। इसलिए मानव जीवन को खुशहाल बगीचा बनाने के लिए हमें आध्यात्मिक बीज को ही बोना होगा। इस तरह हम आध्यात्म को बीज बनाते हुए उसी वातावरण को पैदा भी कर सकते हैं।

अध्यात्म = श्रद्धा + भक्ति!
श्रद्धा + भक्ति = विश्वास!
विश्वास = अध्यात्म!!!
धर्म = भावना + भावना
भावना + भावना - श्रद्धा
श्रद्धा + भावना = भक्ति
भक्ति + भावना = विश्वास
विश्वास + भावना = अध्यात्म

इस तरह धर्म कहीं न कहीं से अध्यात्म से जुड़ा हुआ है और अध्यात्म तो धर्म के लिए नींव है, लेकिन हमारा पहला धर्म होना चाहिए अध्यात्म...क्योंकि धर्म का पहला धर्म है अध्यात्मिक भावना! अध्यात्म का अव्वल कर्म है विश्वास! विश्वास के सूत्रधार हैं भक्ति और श्रद्धा!

धर्म का काम कर्म। सर्वोत्तम अध्यात्म का भी सर्वोत्तम काम है कर्म! पर पहले अध्यात्म की जरूरत है। अध्यात्म से भक्ति-श्रद्धा, विश्वास पैदा होते हैं और दे तीनों अपना कर्म करने लगते हैं। जब कर्म सही राह पर होगा तब ही धर्म जन्म ले सकता है। हमें केवल डिवाइन पार्क यानी अध्यात्मिक बाग के माली बनकर धर्म से इसकी सिंचाई करने की जरूरत है ...तब ही हम सच्चे अच्छे नेक धार्मिक बन सकते हैं।

मुंबई

❑❑❑

सस्कृति- प्रेरणा

मुंबई में उद्योगपति रतनजी टाटा का नया अवतार...

इंडिया मीडिया लिंक, इवेंट्स एंड मैनेजमेंट ने हर्षोल्लास के साथ मनाया जन्मदिन... देशभर के गणमान्य व्यक्तियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया

मुंबई, भारत के उद्योग रत्न के रूप में दुनियाभर में विख्यात दिवंगत उद्योगपति रतन टाटा का जन्मदिन माटुंगा सेंटर में इंडिया मीडिया लिंक एंड मैनेजमेंट द्वारा धूमधाम से मनाया गया। उद्घाटन समारोह में रतन टाटा की सेल्फी देखकर वहां मौजूद प्रशंसकों को ऐसा लगा जैसे रतन टाटा सचमुच धरती पर वापस आ गए हों। एक दिवसीय इस समारोह में उद्यमिता, सामाजिक, चिकित्सा, शैक्षिक और नवाचार के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए देशभर के गणमान्य व्यक्तियों को आकर्षक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। बॉलीवुड सेलिब्रिटी, उद्यमी और सामाजिक कार्यकर्ता के. रवि दादा ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का विधिवत सम्मान किया।

यह भव्य समारोह माटुंगा के सांस्कृतिक हॉल में आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम की शुरुआत इंडिया मीडिया लिंक एंड इवेंट मैनेजमेंट के प्रबंध निदेशक के. रवि द्वारा दिवंगत उद्योगपति रतनजी टाटा की भव्य तैलचित्र के अनावरण के साथ हुई। रवि दादा और इस कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक डॉ. रत्नाकर अहिरे, फिल्म उद्योग की प्रसिद्ध अभिनेत्रियाँ माही शर्मा, होनी भल्ला, उद्यमी किसन भोसले, सलीम रहमानी, पवित्रा सांवत और आम्रपाली चव्हाण मुख्य रूप से सम्मिलित हुए।

इसके बाद कार्यक्रम की शुरुआत 'गर्जा महाराष्ट्र माझा' गीत के साथ हुई। इससे पहले जेजे अस्पताल की विशेषज्ञ टीम द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें मुंबईवासियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। व्यापार जगत से डॉ. अजय देसाई, श्रीमती विशाखा गायकवाड़, कुमारी स्वप्नाली यादव, सत्यवान रेडकर, अभिजीत सोनवणे, फैजुला खान, डॉ. एस.एस. शास्त्री, डॉ. रत्नाकर अहिरे, पवित्रा सावंत

आसरा मुक्तांगन का सर रतन टाटा पर प्रकाशित विशेषांक भेंट करते हुए।

आसरा मुक्तांगन के युवा विशेषांक का विमोचन किया गया। जिसकी सभी ने सराहना की।

और महाराष्ट्र तथा भारत के अन्य गणमान्य व्यक्तियों को उनके कार्य के लिए मानद पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। स्वर्गीय रतन टाटा गौरव पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के साथ इंडिया मीडिया लिंक एवं इवेंट मैनेजमेंट के प्रबंध निदेशक के. रवि दादा की प्रशंसा करते हुए उन्होंने भारतीय उद्योग जगत के सपूत स्वर्गीय रतन टाटा का जन्मदिन भारत में लगातार आठवीं बार मनाने के लिए अपनी सराहना व्यक्त की। उस समय सामाजिक कार्यकर्ता के. रवि दादा ने कहा कि मैं रतन टाटा से कई बार मिला हूं। मैंने उनसे उनके जन्मदिन मनाने के बारे में पूछा, लेकिन उन्होंने अपना रुख स्पष्ट कर दिया कि वे मेरा जन्मदिन नहीं मनाएंगे। लेकिन के. रवि दादा ने रतनजी टाटा से दृढ़तापूर्वक कहा था कि जब तक मैं जीवित हूं, हम देशवासियों की ओर से आपका जन्मदिन मनाएंगे और आपके कार्यों का गुणगान करेंगे। यह संगठन पिछले 7 वर्षों से हर साल मुंबई में रतनजी टाटा का जन्मदिन मनाते आ रहे हैं। अब तक टाटा के जन्मदिन पर करीब 4000 लोगों को हेलिकॉप्टर से मुंबई दर्शन कराया, जिसमें झुग्गी-झोपड़ियों के गरीब लोग या छात्र, विधवाएं, आदिवासी महिलाएं और विकलांग सम्मिलित हुए और उन्हें ताज होटल में डिनर भी कराया गया।

रतन टाटा का जन्म 28 दिसंबर, 1937 को मुंबई में हुआ था और उनका निधन 9 अक्टूबर, 2024 को मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में हुआ था। 28 जनवरी 2025 को आयोजित कार्यक्रम में उन्हें सम्मानित करने के लिए मुंबई और पूरे देश से बधाइयां आ रही हैं। 'सर रतन टाटा इंटरनेशन बिजनेस अवार्ड' 28 दिसंबर 2025 को विदेश में मनाने की घोषणा की गई।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. अजय देसाई, डॉ. शास्त्री, के. रवि दादा और डॉ. रत्नाकर अहिरे ने रतनजी टाटा के जीवन पर विस्तृत एवं समीचीन भाषण दिया तथा पुरस्कार विजेताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। अंत में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. रत्नाकर अहिरे ने धन्यवाद ज्ञापन किया और कार्यक्रम का समापन हुआ।

-लव क्षीरसागर

❑❑❑

आगामी अंक में...

साथियो! भारत उत्सवों का देश है। हम छोटे-बड़े सभी त्योहारों का उन्मुक्त होकर लुत्फ़ उठाते हैं। 'आसरा मुक्तांगन' समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य, अनुसंधान जैसे विषयों की धुरी पर निरंतर आगे बढ़ रही है। आप अपनी कविता, कहानी या अन्य लेख हमें हमारे निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं। आप अपने आलेख सीधे संपादक महोदय को भी भेज सकते हैं। 15 फरवरी 2025 तक मिले लेखों पर विचार किया जाएगा।

ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com
व्हाट्सअप- 9152925759

गणतंत्र दिवस: एक नई शुरुआत की कहानी

राम विलास शास्त्री

26 जनवरी 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ और भारत एक गणराज्य बन गया था। भारत एक गणराज्य के रूप में अस्तित्व में आया, यानी कि देश का शासन अब जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा होगा, न कि किसी सम्राट या विदेशी शासन के अधीन। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ ध्वजारोहण कर भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया। यह ऐतिहासिक क्षणों में गिना जाने वाला समय था। इसके बाद से हर वर्ष इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है तथा इस दिन देशभर में राष्ट्रीय अवकाश रहता है।

गणतंत्र दिवस की प्रमुख घटना नई दिल्ली में होने वाली गणतंत्र दिवस परेड है, जो हर साल बड़े धूमधाम से आयोजित होती है। इस परेड में भारत की सैन्य शक्ति, सांस्कृतिक विविधता और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया जाता है। इस दिन भारत के राष्ट्रपति परेड की सलामी लेते हैं और देश को संबोधित करते हैं।

इसके अलावा, पद्म पुरस्कारों की घोषणा भी की जाती है, जो कला, विज्ञान, सामाजिक सेवा और सार्वजनिक जीवन में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिए जाते हैं।

26 जनवरी और भारतीय समाज के बीच गहरा संबंध है, क्योंकि यह दिन भारत के स्वतंत्रता संग्राम और संविधान निर्माण के संघर्ष की महानता को याद दिलाता है। गणतंत्र दिवस भारतीय नागरिकों के लिए सम्मान, स्वतंत्रता और समानता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने अपनी स्वतंत्रता के लिए लंबा संघर्ष किया, और 26 जनवरी 1950 को जब संविधान लागू हुआ, तब यह दिन भारतीय जनता के अधिकारों, कर्तव्यों और राष्ट्रीय पहचान को लेकर एक नया युग लेकर आया।

गणतंत्र दिवस न केवल हमारे संविधान की शक्ति और लोकतंत्र के महत्व को दर्शाता है, बल्कि यह हम सबको यह याद दिलाता है कि हमें अपने अधिकारों और कर्तव्यों का पालन करते हुए एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र की दिशा में योगदान देना है।

यह दिन हमें भारतीयता, हमारी विविधता, संस्कृति, और राष्ट्रीय एकता

की ताकत का अहसास भी कराता है। इसके अलावा, यह अवसर हर भारतीय को अपने देश के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना को प्रगाढ़ करने का होता है।

यह दिन भारतीय लोकतंत्र और स्वतंत्रता का प्रतीक है। भारतीय संविधान द्वारा दिए गए अधिकारों, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के मूल्यों को मनाने का अवसर होता है। यह हमारे संविधान की शक्ति को दर्शाता है, जो देश के प्रत्येक नागरिक को उनके मूलभूत अधिकारों की रक्षा प्रदान करता है।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर होने वाली परेड, भारत की सांस्कृतिक विविधता, सैन्य शक्ति और तकनीकी विकास का भी प्रदर्शन करती है, जिससे हम भारतीयों को गर्व महसूस होता है। इस दिन भारतीय नागरिकों को यह याद दिलाया जाता है कि हम एक ऐसे राष्ट्र का हिस्सा हैं जो धर्मनिरपेक्षता, समानता, और लोकतंत्र के मूल्यों में विश्वास रखता है।

साथ ही, यह दिन हमें यह भी सिखाता है कि संविधान और कानून का पालन करना, और अपने कर्तव्यों को समझना और निभाना, हमारे लोकतांत्रिक समाज का आधार है। यह हमें अपने देश के प्रति जिम्मेदारी और प्यार की भावना से भी प्रेरित करता है

भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने-आप को बदलते समय के साथ ढ़ालती भी आई है। आजादी पाने के बाद भारत ने बहुआयामी सामाजिक और आर्थिक प्रगति की है। भारत कृषि में आत्मनिर्भर बन चुका है और अब दुनिया के सबसे औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में भी इसकी गिनती की जाती है। विश्व का सातवां बड़ा देश होने के नाते भारत शेष एशिया से अलग दिखता है जिसकी विशेषता पर्वत और समुद्र ने तय की है और ये इसे विशिष्ट भौगोलिक पहचान देते हैं। उत्तर में बृहत् पर्वत श्रृंखला हिमालय से घिरा यह कर्क रेखा से आगे संकरा होता जाता है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिन्द महासागर इसकी सीमा निर्धारित करते हैं।

गणतंत्र दिवस भारतीय समाज के लोकतांत्रिक और संविधानिक मूल्यों का प्रतीक है, वहीं सनातन धर्म भारतीय संस्कृति, जीवनशैली और दर्शन का आधार है। हालांकि ये दोनों अलग-अलग अवधारणाएँ हैं, फिर भी उनका एक गहरा संबंध है, क्योंकि सनातन धर्म ने भारतीय समाज को आदर्श, नैतिकता और जीवन के सही मार्ग को समझाया, जो आज भी हमारे संविधान और लोकतांत्रिक सिद्धांतों में प्रतिबिंबित होता है।

सनातन धर्म के सिद्धांतों में धर्म, सत्य, अहिंसा, और न्याय की जो बातें कही गई हैं, वे हमारे संविधान में भी परिलक्षित होती हैं। भारतीय संविधान में भी समानता, स्वतंत्रता, और भाईचारे का समावेश है, जो सनातन धर्म के मूल्यों से मेल खाता है। उदाहरण के लिए, अहिंसा का सिद्धांत, जो महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख अंग बना, आज भी भारत के लोकतंत्र और उसकी सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है।

सनातन धर्म ने हमेशा मानवता के कल्याण, धर्म, और सत्य के मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है। इस दृष्टिकोण से गणतंत्र दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हमारा संविधान और लोकतंत्र उन्हीं उच्च आदर्शों पर आधारित हैं जो सनातन

धर्म ने सिखाए थे, जैसे कि समानता, धर्मनिरपेक्षता, और न्याय।

इसके अलावा, 26 जनवरी का दिन हमें यह भी याद दिलाता है कि भारतीय संस्कृति और समाज अपनी विविधता और सामाजिक एकता में समृद्ध है, जो सनातन धर्म की विविधता में एकता की अवधारणा से पूरी तरह मेल खाता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को याद करने और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का भी अवसर है। जबकि गणतंत्र दिवस का मुख्य उद्देश्य संविधान की अहमियत और लोकतंत्र की ताकत को प्रदर्शित करना है, यह दिन उन वीर शहीदों के बलिदान को भी याद करता है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, भारतीय नेताओं और क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी हुकूमत से मुक्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया। कई महान शहीदों ने अपनी जान दी, जिनमें भगत सिंह, राजगुरु, सुलेमान साहब, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद, और लक्ष्मी बाई जैसे अनेक नाम शामिल हैं। इन सभी शहीदों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपनी अहम भूमिका निभाई और देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराया।

हमें स्वतंत्रता संग्राम के नायकों के संघर्ष को सम्मान देना चाहिए और उनके द्वारा स्थापित किए गए मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए।

गणतंत्र दिवस पर, विशेष रूप से शहीदों की याद में देशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते हैं, और उनके योगदान को सलाम करने के लिए एकजुटता का प्रदर्शन किया जाता है।

26 जनवरी, गणतंत्र दिवस के दिन भारत में कई महत्वपूर्ण बदलाव और नई शुरुआतें हुई थीं, जो आज भी हमारे देश के लोकतंत्र की नींव हैं। यहाँ कुछ प्रमुख बदलाव हैं जो गणतंत्र दिवस के दिन हुए थे:

भारतीय संविधान की शुरुआत:

26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ, जिससे देश को एक संवैधानिक गणराज्य के रूप में स्थापित किया गया। इस दिन से भारत ने अपने लोकतांत्रिक और स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपनी यात्रा शुरू की।

लोकतांत्रिक व्यवस्था की शुरुआत:

26 जनवरी 1950 को भारत ने अपनी लोकतांत्रिक व्यवस्था को औपचारिक रूप से अपनाया। इस दिन से देश में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार मिलते हैं और भारत ने एक लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में अपनी पहचान बनाई।

संविधान में अधिकारों का समावेश:

संविधान में नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय के अधिकार दिए गए। खासतौर पर, ष्मौलिक अधिकारोंष् का समावेश किया गया, जिनसे हर नागरिक को समाज में बराबरी का दर्जा मिलता है।

राष्ट्रपति का पद और शपथ ग्रहण:

26 जनवरी 1950 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली, और यह दिन राष्ट्रपति के पद के महत्त्व को स्थापित करने वाला था।

गणतंत्र दिवस की परेड:

गणतंत्र दिवस पर नई दिल्ली में हर साल राष्ट्रीय परेड आयोजित की जाती है, जो देश की सांस्कृतिक धरोहर, सैन्य शक्ति और विकास को प्रदर्शित करती है। यह एक नया प्रतीक बना कि हम एक मजबूत और आत्मनिर्भर राष्ट्र की ओर बढ़ रहे हैं।

इन बदलावों ने भारत को एक नया दिशा और मजबूत लोकतांत्रिक पद्धति दी, जिससे देश को विकास और एकता के मार्ग पर अग्रसर किया। 26 जनवरी ने यह संदेश दिया कि हम सब एक हैं और हर नागरिक को समान अधिकार मिलते हैं।

❑❑❑

कुसुम त्रिपाठी
(लेखिका व समाजसेवी)

स्त्रियों के संदर्भ में भूमंडलीकरण में समाज के बदलते रूप

90 के दशक में सोवियत रूस के खात्मे के बाद तथा धीरे-धीरे पूर्वी यूरोप मे समाजवाद के अंत के साथ ही विश्व पटल पर अमेरिका का एकमात्र साम्राज्य स्थापित हो गया। लगभग आधी दुनिया में समाजवाद का प्रभाव था वहाँ औरतों का लिंग के आधार पर कभी भेदभाव नहीं किया गया। लिंगविहीन समाज की स्थापना के कारण इन देशों में महिलाओं को पुरुषों के बराबर स्वतंत्रता समानता तथा बौद्धिकता के अवसर मिले।

ऐसे अवसर आज तक किसी पूंजीवादी व्यवस्था में नहीं मिले हैं। इन देशों ने पूरी दुनिया की औरतों के लिए एक ऐतिहासिक मिसाल छोड़ी है। इन समाजवादी देशों ने नारी के श्रम का इस्तेमाल कभी भी मुनाफा कमाने के लिए नहीं किया। पर आज भूमंडलीकरण के बाद औरतें साम्राज्यवाद के शिकंजे में बुरी तरह फंसी हुई है और साम्राज्यवादी देशों का चरित्र भयानक है। यह 'नेट कॅपिटलिज्म' (वृद्धी पूंजीवाद) का जमाना है, जिसका दावा है, पूंजीवाद को कोई हरा नहीं सकता। पूंजीवाद सर्वव्यापी है क्योंकि वैश्विक बाजारों, बहुराष्ट्रीय निगमों, विश्व बैंकों और

अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष संस्थाओं के जरिए उसने अखिल भूमंडल पर अपना प्रभुत्व और वर्चस्व कायम किया है। पूंजीवाद सर्व शक्तिमान है क्योंकि उसके पास संपूर्ण विश्व को वश में करने वाली पूंजी की शक्ति के साथ-साथ समूची दुनिया को नष्ट कर डालने में समर्थ शस्त्रास्त्रों से युक्त सैनिक भी है। इस उत्तर आधुनिकता ने पिछले 25 वर्षों में अर्थव्यवस्था ही बदल दी। आज उदारवाद निजीकरण और बाजारवाद ने सारे रिश्ते बदल दिए। नैतिकता, विवेक सामाजिक मूल्य जैसी बातें बकवास हो गई। आज पैसा कमाने की होड़ लगी हुई है। पूंजीवादी व्यवस्था ने मुक्त बाजार, खुली प्रतियोगिता मांग और पूर्ति के नियम को बढ़ावा दिया, उन्होंने औरतों को भी बाजार के हवाले कर दिया।

आज नारी मुक्ति आंदोलन से आई नारी स्वतंत्रता को पूंजीवाद ने नारी के स्वतंत्र निर्णय लेने के विश्वास को स्वतंत्रत उपभोक्ता में बदल दिया है। पूंजीवादी लोग मुनाफा कमाने के लिए गरीब देशों की नारियों के श्रम का शोषण कर रहे हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति में औरत महज एक वस्तु है- 'माल' है। उसका शरीर ही सब कुछ है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने औरत को महज एक प्रोडक्ट के रूप में पेश किया है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण आपको विज्ञापनों में नजर आयेगा। ट्रक हो या टायर, कार हो या पेट्रोल, शराब की बोतल हो या कम्प्यूटर हो, परफ्यूम हो या डियो कोई परिधान हो या सौंदर्य प्रसाधन या खाने पीने की चीजें हर एक विज्ञापन में अर्धनग्न कपड़ों में औरतों के जिस्म का प्रयोग बेहद सेक्सी तरीके में किया जाता है। यानी सामान बेचने तथा ग्राहकों को लुभाने के लिए उत्पादक औरत के शरीर को सामान के रूप में प्रस्तुत करते हैं। आज भूमंडलीकरण की उपभोक्तावादी संस्कृति ने औरतों का पूरे विश्व में वस्तुकरण कर दिया है। 'बोल्ड एंड ब्युटीफुल' के नाम पर पेज थ्री की रौनक बनती औरतें शायद यह समझ ही नहीं पाती कि उनकी कामुक पोशाकें भारी-भरकम मेकअप, हाथ में महंगी शराब की बोतलों का अर्थ स्वतंत्रता, समानता नहीं है द्य आज मीडिया द्वारा औरतों का सबसे ज्यादा वस्तुकरण करके बेइज्जत किया जा रहा है। आज फिल्म अभिनेत्रियों, मॉडलों उंचे ओहदों पर आसीन औरतें जो पढ़ी-लिखी है, वे भी अंग प्रदर्शन कर रही है और उसी को उन्होंने अपनी पहचान बना ली है। सौंदर्य प्रसाधनों, ड्रेस डिजाइनरों, हेअर स्टाईलों की गुथ्थी में फंसी आज की औरत जो ऊपर से तो स्वतंत्र दिखती है पर उसके जीवन में झांककर देखा जाए तो वह पितृसत्ता के ढांचे में फंसी नजर आएगी।

आज का बाजारवाद स्त्री-पुरुष दोनों को उपभोक्ता के रूप में देख रहा है। आज दोनों ही बिकाऊ समझे जा रहे हैं। नारीवाद ने पुरुषों को कभी भी 'भोग' की वस्तु नहीं माना पर अब चूंकि औरतें भी पढ़ लिख गई है, उनके पास भी सामान खरीदने की ताकत आ गई है इसलिए औरतों को लुभाने के लिए विज्ञापनों में पुरुषों के कपड़े उतरवाए जा रहे है। वे भी 'फेअर ॲन्ड लवली' लगा रहे हैं, आज पुरुषों को भी उपभोक्तावाद के हवाले किया जा रहा है। साम्राज्यवादी ताकतों ने हमारे देश में सामंतवादी ताकतों के साथ गठजोड़ कर लिया है जिसका परिणाम यह निकला कि एक ओर औरत को उपभोग की वस्तु बनाया जा रहा है जिससे औरत मात्र शरीर के रूप में भोग की वस्तु बन गई है तो, दूसरी ओर सामंती ताकतों को मजबूत करके खाप पंचायतों द्वारा तो कभी अन्य कट्टरपंथी धार्मिक संगठनों द्वारा महिलाओं को मोबाईल फोन न रखने, जीन्स पैंट न पहनने, स्कार्फ द्वारा मुंह ढंकने, बुरका पहनने का फरमान जारी किया जा रहा है। आज कितनी ही लड़कियां स्कूटर पर मुंह ढंककर बैठी रहती है ताकि उन्हें कोई पहचान ना लें। इससे लड़कों का ही फायदा है। पहचान छुपाकर उनके साथ अवैध संबंध बनाते है और किसी को पता भी नहीं चलता। नारीवाद को 'फ्री सेक्स' के रूप में प्रतिष्ठित किया जा रहा है। नारीवाद ने जेंडर विभेद के खिलाफ संघर्ष किया है, जिसे राजसत्ता भी स्वीकार करती है पर समाज इसे तोड़ रहा है।

समाज में उपभोक्तावादी संस्कृति महिलाओं की हिंसा को और बढ़ावा दिया। 'मैगी संस्कृति' जो आयी- दो मिनट में तैयार उस संस्कृति ने इंस्टंट (तुरंत) होने वाली चीजें हमें सिखाई। बस फिर क्या था? रातों-रात अमीर बनने के सपने दहेज के भयानक रूप में सामने आए। गाडी, बंगला, फ्रीज, टी.वी. महंगे फर्नीचर, गहने सभी उपभोग की वस्तुएं दहेज में मांगी जाने लगी। दहेज न मिलने पर औरतों को जलाकर मार देना आम हो गया। आज एन.सी.आर. की रिपोर्ट के अनुसार 2012 में 8233 दहेज हत्याएं हुई। हर एक घंटे में दहेज के कारण एक महिला की मौत होती है। दहेज के कारण लोग बेटियां पैदा नहीं करना चाहते इसलिए भ्रूणहत्या जैसी बर्बरता समाज में दिन-दहाड़े अपनाई जा रही है। आज 1000 प्रति पुरुष पर 940 स्त्रियों का अनुपात है। पितृसत्ता के अंतर्गत औरतों पर नियंत्रण रखने के लिए अनेक प्रकार की हिंसा का इस्तेमाल किया जा रहा है और इन्हें प्रायः जायज ठहराया जाता है। बेटे को कुलदीपक कहना, पति को स्वामी, पत्नी को दासी, घर के अंदर ही पति-पत्नी के बीच मालिकाना रिश्तों को बदलना होगा। सत्ता के साथ हिंसा जुड़ी है, परिवार में प्रेम की जगह हिंसा है बराबरी की जगह मालकियत है। औरतों को समाज में तुच्छ समझा जाता है, उनकी औकात न के बराबर है। औरतों का समाज में दोयम स्थान से भी नीचे स्थान

है, उनका समाज में कोई मूल्य ही नहीं है। आए दिन एकल औरतों, परित्यक्ता औरतों, विधवाओं, तलाकशुदा...बिनब्याही औरतों के साथ समाज में हिंसा की जाती है, उन्हें डायन कहकर नंगा घुमाने से लेकर पत्थर से मार डालने तक की घटनाएं होती है। सर्वेक्षण करने पर पता चला कि वे औरतें जो एकल है, आत्मसम्मान से अपने बल पर समाज में जीना चाहती है किसी वर्चस्वशाली पुरुष या ओझाओं के सामने नहीं झुकती हैं, उन्हें ही 'डायन' घोषित कर मार दिया जाता है। अंधविश्वासी, दकियानुसी समाज औरत को स्वतंत्रता से जीना नहीं देख सकता। तेजाब फेंकने की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। अधिकतर तेजाब फेंकने की घटनाओं में एक तरफा प्यार शामिल है। लड़के ने लड़की के सामने प्यार या विवाह का प्रस्ताव रखा, लडकी ने 'ना' कहा तो लड़के ने तेजाब फेंका। पुरुष का अहंकार आहत होता है। एक तुच्छ सी लड़की भला लड़के को 'ना' कैसे कह सकती है? क्योंकि समाज ने लड़की को स्वतंत्र निर्णय का हक नहीं दिया है और यदि कोई स्वतंत्र निर्णय ले लेती है तो उसे पुरुष सह नहीं पाता। 'तुम मेरी नहीं तो किसी की नहीं हो सकती क्योंकि लड़की तो एक 'सामान' है। लड़की उपभोग की वस्तु है तो लड़का उपभोक्ता। खाप पंचायतें लड़के लड़की को स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार नहीं देती। सामंती सोच, जाति व्यव्यस्था के साथ-साथ वैवाहिक संबंधों को भी जोड़ने का काम करती है। यहाँ लड़का-लड़की नहीं परिवार-परिवार के बीच रिश्ते बनते है।

घरेलू हिंसा के अनेक रूप है। एन.सी.आर. की रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर वर्ष घरेलू हिंसा के एक लाख केस दर्ज होते हैं। हर नौ मिनट में एक औरत घरेलू हिंसा की शिकार होती है। गरीबी के कारण औरतें और बच्चियां देह व्यापार में घसीटी जा रही है। 40 हजार करोड़ रुपये का वेश्या व्यापार है, एक करोड वेश्याएं है भारत में, जिसमें 5 लाख बच्चियां हैं। आज भारत विश्वबाजार में बच्चियों के देह व्यापार का सबसे बडा अड्डा है। एन.सी.आर. के अनुसार बच्चियों पर हिंसा के 2012 में 38,172 केस दर्ज हुए है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने बलात्कार को जन्म दिया। 'यूज एंड थ्रो' की संस्कृति ने 'बलात्कार करो और मार दो' को जन्म दिया। सड़कों पर, कॉलेज जा रही लड़कियां, उनके मुंह पर ब्लैड से हमला,

सड़कों पर औरतों पर हमला, काम के स्थान पर छेड़छाड़, सेक्स की दुनिया को बढावा देना, बाल-वेश्याओं में वृद्धि, बच्चियों से सौंदर्य प्रतियोगिता करवा कर उनका बचपन खत्म करना, वे चमक-दमक की दुनिया में बड़ों जैसा व्यवहार करने लगती है। मनोवैज्ञानिकों ने इसे इतना ही खतरनाक माना है, जितना कम उम्र में मां बनना। इंटरनेट पर साइबर क्राइम में सबसे ज्यादा बच्चे है। बच्चों का 'सेक्स गेम' के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। अश्लीलता बढ़ रही है।

आज जज से लेकर धार्मिक गुरु पत्रकार तक सभी जेल में है, कारण बलात्कार का केस। उपभोक्तावादी संस्कृति कितनी भयावह है कि एन.सी.आर. के अनुसार 97% बलात्कारी, परिवार व रिश्तेदार होते है और मात्र 3% बाहरी। आए दिन नाना, दादा, मामा, चाचा, सगे भाई द्वारा बलात्कार की घटनाएं होती रहती है। समाज के सभ्य संस्कृति के इतिहास में हमने कभी भी समाज की औरतों के साथ इतना जुल्म नहीं देखा जितना कि आज हो रहा है। आज औरत मात्र 'लिंग' बनकर रह गई है। मां-बहनों के आंचल में प्यार का स्वर्ग नहीं दिखाई देता। छह महीने की बच्ची से लेकर पचहत्तर वर्ष की बुढियों तक के बलात्कार की घटनाओं के केस पुलिस स्टेशन में दर्ज होते है। क्या हम औरतों ने अपने बेटों को पालने में, संस्कार देने में कहीं गलती कर दी है? समाज के नैतिक मूल्य इतने घटियां कैसे हो गए? मां, बेटी, बहनों की इज्जत करने वाले, देवियों की पूजा करनेवाले इस देश ने क्या अब दुर्योधन संस्कृति को अपनी आदर्श संस्कृति बना लिया है? यदि ऐसा है तो समाज के कृष्ण को जागना पड़ेगा ताकि एक स्वस्थ समाज की रचना हो सके।

ठाणे, महाराष्ट्र

❑❑❑

भाषा-

डॉ. उदयप्रताप सिंह

हिंदी और भारतीय भाषाओं की अंतश्चेतना

भाषा की भिन्नता होते हुए भी तात्विक एकता यहां की थाती है। मनुष्य मात्र में एक ही ज्योति का प्रकाश भारत भूमि की मौलिकता है। इसे झंकृत करने में महाराष्ट्र के नामदेव, उत्तर प्रदेश के तुलसी-सूर-कबीर-रैदास, गुजरात के नरसी मेहता, पंजाब-हरियाणा के गुरु गोविंद सिंह, बाबा लालदास, गुरु जंभेश्वर, बंगाल के महाप्रभु चैतन्य, असम के शंकरदेव, माधवदेव, मध्य प्रदेश के गुरु घासीराम, बिहार के दरिया साहब, राजस्थान के दादू दयाल आदि संतों की दृष्टि एक जैसी दिखती है।

आजादी के आंदोलन के साथ आधुनिक हिंदी भाषा का स्वरूप भी राष्ट्रव्यापी होने लगा था। इस दौरान कन्याकुमारी से कश्मीर और अटक से कटक तक हिंदी इस संपूर्ण आंदोलन का नेतृत्व भी करने लगी थी। उसी अभियान में सुभाषचंद्र बसु ने राष्ट्रीय स्तर पर यह घोषणा की- 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' उनका यह ऐतिहासिक वाक्य हिंदी में ही था। उनके इस कथन में कोई आकस्मिकता नहीं, अपितु इसके पीछे हिंदी भाषा की अंतर्वाही शक्ति और अन्य भाषा-भाषियों में उसकी स्वीकार्यता रही है। सुभाषबाबू एक दूरंदेशी राष्ट्रनायक थे। उनकी दृष्टि में आजादी के आंदोलन में हिंदी और हिंदी भाषी दोनों महत्वपूर्ण थे। यह अकारण नहीं था कि 'आजाद हिंद फौज' में पूर्वी उत्तर प्रदेश के सैनिकों की संख्या सर्वाधिक थी। कानपुर के श्यामलाल 'पार्षद' द्वारा हिंदी में लिखा झंडा गीत- 'झंडा ऊंचा रहे हमारा विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' हिंदुस्तान में क्रांति का गीत बन गया था। पंजाबी, मराठी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, उड़िया, असमिया इत्यादि भाषा-भाषी आंदोलनकारियों का यह प्रिय गीत था। कानपुर से चेन्नई तक आजादी के दीवानों को अलमस्त करनेवाला यह गीत भाषाओं की सीमाओं को तोड़कर जनता की आवाज का रूप पकड़ चुका था। हिंदी की इसी स्वीकार्यता, लोकोन्मुखता और संपूर्ण देश को एकजुट करने की क्षमता ने इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलवाया। यही कारण था अनेक अहिंदी भाषी नेताओं और विद्वानों ने हिंदी को महत्व प्रदान किया। लोकमान्य तिलक, गोखले, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, केशवचंद्र सेन, पं. नेहरू, राजगोपालाचारी जैसे व्यक्तियों ने हिंदी को महत्व प्रदान करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रचार व प्रयोग किया।

स्वतंत्रता के पांच-छह सौ वर्ष पूर्व से ही भक्ति-साहित्य हमारे देश की सांस्कृतिक एकता का सुदृढ़ आधार बना हुआ है। भाषा की भिन्नता होते हुए भी तात्विक एकता यहां की थाती है। मनुष्य मात्र में एक ही ज्योति का प्रकाश भारत भूमि की मौलिकता है। इसे झंकृत करने में महाराष्ट्र के नामदेव, उत्तर प्रदेश के तुलसी-सूर-कबीर-रैदास, गुजरात के नरसी मेहता, पंजाब-हरियाणा के गुरु

गोविंद सिंह, बाबा लालदास, गुरु जंभेश्वर, बंगाल के महाप्रभु चैतन्य, असम के शंकरदेव, माधवदेव, मध्य प्रदेश के गुरु घासीराम, बिहार के दरिया साहब, राजस्थान दादू दयाल आदि संतों की दृष्टि एक जैसी दिखती है। विडंबना है कि सदियों पूर्व की यह धारा अब सूख रही है। भाषायी अंतश्चेतना में निहित सहसंबंध के तंतु कमजोर पड़ते जा रहे रहे हैं।

आजादी के दौरान हिंदी के इस सर्वसमावेशी स्वरूप को समझते हुए समाज-चिंतकों और स्वाधीनता सेनानियों ने इसे अन्य भारतीय भाषाओं और साहित्यिक अधिष्ठानों के केंद्र में रखा। यह अभियान स्वाधीनता से जुड़ा था, अत: इसकी अनुगूंज पूरे देश में होने लगी। पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण का साहित्यिक अंतर्संबंध प्रांतीय भाषाओं में खोजा जाने लगा। सांस्कृतिक एकसूत्रता के माध्यम से भाषायी अंतश्चेतना का विस्तार आजादी का एक महत्वपूर्ण आयाम है। 'हिंदी वर्द्धिनी सभा', 'साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' कई जनपदों में 'नागरी प्रचारिणी सभा' की इकाइयों की स्थापना 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' आदि के माध्यम से भाषायी चेतना को जागृत करने का प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर किया गया। अनूदित साहित्य का कार्य तेजी से संपन्न होने लगा। संपूर्ण देश में संगोष्ठियों और अधिवेशनों की बाढ़-सी आ गयी। रवींद्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी आदि हिंदीतर भाषी महापुरुषों ने कई बार हिंदी सभाओं की अध्यक्षता की। कांग्रेस पार्टी के अधिवेशनों के प्रस्ताव हिंदी भाषा में पारित होने लगे। इस प्रकार हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी। राष्ट्रभाषा के रूप में उसका महत्त्व भी बढ़ने लगा। हिंदीतर प्रदेश के लोगों ने हिंदी में सांस्कृतिक आदान-प्रदान का महत्त्वपूर्ण वातावरण निर्मित किया। उस दौरान तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम साहित्य का हिंदी में और हिंदी का दक्षिण भारतीय भाषाओं में तीव्रता से अनुवाद होने लगा। पर आजादी के बाद भारतीय भाषाओं की पारस्परिक दूरी बढ़ने लगी। आज यह दूरी राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गयी है।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से संविधान में त्रिभाषा का सिद्धांत समाहित किया गया, पर उत्तरी भारत का जनमानस उसे ग्रहण करने में ना-नुकर करने लगा। इसे समाजशास्त्रियों ने राष्ट्रीयता का क्षरण कहा। यद्यपि दक्षिण के लोगों ने (राजनीतिज्ञ नहीं) हिंदी सीखने और उसके विकास करने का सराहनीय प्रयास किया। उत्तर भारतीयों की दक्षिणप्रातीय

भाषाओं के प्रति उपेक्षा, उदासी और अन्यमनस्कता ने भारतीय समाज को एक बड़ी सांस्कृतिक थाती से वंचित कर दिया। आज हिंदी खुद हिंदीवालों के वाग्जाल में ही उलझकर रह गयी है। जो क्षमता रचनात्मक हो सकती थी, वह स्वार्थी जोड़-तोड़ में लग रही है। विभिन्न भाषाओं से भारतीयता के बिंब गायब हैं। जातीयता बोध और देशज भाव जड़वत् हो गये हैं। आपसी संघर्ष बढ़ रहा है। हिंदी का साहित्य और समाज भारतीय भाषाओं में निहित एकता के विधायक तत्वों की पहचान से दूर होता जा रहा है। भाषायी माध्यम से ध्वनित इस सांस्कृतिक चेतना का विस्मरण राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए खतरा बन गया है। भारतीय समाज का बिंब उभारने के बजाय यूरोपीय और पश्चिमी समाज के चित्र और विचित्र भाव हिंदी का श्रेष्ठ साहित्य कहा जा रहा है। यह बयार हिंदी के लिए घातक तो है ही, 'हिंदी हैं हम, वतन है हिंदोस्तां हमारा' के लिए भी कम खतरनाक नहीं है।

राष्ट्र के विकास के लिए हिंदी और भारतीय भाषाओं में समन्वय करना अपरिहार्य है। भाषा संस्कृति की संवाहिका होती है और सामाजिक गतिविधियों को सूत्रबद्ध भी करती है। अत: नाटक, संगोष्ठी, साहित्यिक यात्रा, अंत संवाद और अनुवाद के माध्यम से पुन: एकता के बिखरे तत्वों को एकत्रित करना असंभव हो गया है। इसके निमित्त साहित्यिक गतिविधियों की श्रृंखलाएं चलानी होंगी। संपर्क को महत्त्व प्रदान करते हुए भारतीय भाषा के मर्म को समझना होगा। कहना न होगा भक्तिकालीन संतों ने यह कार्य राष्ट्र के लिए हजार वर्ष पूर्व ही संपन्न कर लिया है उनके पूर्व गोरखनाथ ने लोकसंपर्क से लोकजागरण की अलग जगायी थी। उनमें से पहले आदि

शंकराचार्य ने केरल से चल उत्तरी भारत में सांस्कृतिक संकुलों के स्थापना की। आजीवक, घोषाल केशकंबली, महावीर, बुद्ध और अन्य भाषा-भाषी संतों, धर्म प्रवर्तकों ने इसी माध्यम से एकता के तंतु को मजबूत किया था। इस संदर्भ में 'रामकथा' का दृष्टांत प्रस्तुत किया जा सकता है। बांग्ला का 'कृत्तिवास', तेलुगु का 'कंबरामायण', सिंधी और पंजाबी में 'रामचरित्र' का गायन हमारी राष्ट्रीय सोच को एकान्वित करता है। लेकिन आज तकनीको दृष्टि से साधन संपन्न होते हुए भी हम इस प्रकार की अंतर्भाषायी चेतना का स्फुरण क्यों नहीं कर पा रहे हैं? यह स्वतंत्र भारत के समक्ष एक बड़ा प्रश्न है।

स्वतंत्र भारत में सांस्कृतिक सेतु का निर्माण कैसे हो? विश्वस्तर पर तकनीकी ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति, सैन्य, युद्ध पद्धति, उच्च शिक्षा और मानविकी में अनेक आयामों का आदान-प्रदान हो रहा है पर हिंदी से भारतीय भाषाओं और भारतीय भाषाओं से हिंदी में आदान-प्रदान की गति मंद है। हम अपनी ही नाभि में स्थित कस्तूरी की सुगंध से दूर होते जा रहे हैं। भाषा और साहित्य के स्तर पर यह एक बड़ी विडंबना कही जायेगी। साठ के दशक में अंग्रेजी हटाओ आंदोलन के अंतर्गत डॉ. लोहिया हिंदी संगोष्ठियों में हिंदीतर भारतीय भाषाओं की शक्ति का आह्वान पुरजोर ढंग से करते थे। आज इस प्रकार की अंतर्भाषायी चेतना अतीत का एक विस्मृत अध्याय बनकर रह गयी है।

भारतीय संदर्भ में भाषायी चेतना के द्वारा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में इस तथ्य का ज्ञान होना आवश्यक लगता है कि वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, योग, जैन-बौद्ध ग्रंथ और प्रांतीय भाषाओं का साहित्य संस्कृति का मूल स्रोत है। इससे निकली भाषा व साहित्य की कोई भी धारा किसी भी भाषा, उपभाषा में हो, वह अपनी ही है। सांस्कृतिक बोध से निकली यह उदारता जब तक प्रत्येक भारतीय के हृदय में घनीभूत होकर उमड़ेगी नहीं, तब तक राष्ट्रीय एकता की चेतना दिवास्वप्न ही रहेगी। भाषा से संस्कृति और संस्कृति से राष्ट्रीय एकता का स्वप्न अंतर्भाषिक चेतना से ही आकार प्राप्त कर सकेगा। सुब्रह्मण्य भारती का देशभक्ति से भरा साहित्य, बाल गंगाधर का गीताभाष्य, भाषिक पड़ताल द्वारा आर्यों का मूल स्थान खोजने में सफलता प्राप्त करनेवाले रामविलास शर्मा का विवेचन, स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा हिंदी में 'सत्यार्थ प्रकाश' लिखने का संकल्प, राष्ट्रीय आंदोलन को धार प्रदान करनेवाले गांधी और राजगोपालचारी का हिंदी का प्रचार अभियान, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन का प्रबल हिंदी भाव, सुभाषचंद्र बसु की 'आजाद हिंद फौज' की राष्ट्रभाषा हिंदी को रखना, शांतिनिकेतन में गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर का 'हिंदी भवन', डॉ. राममनोहर लोहिया की सांस्कृतिक चेतना इसी दिशा के लिए किये गये प्रवास हैं।

भाषायी अंतश्चेतना के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि यहां विविधता में एकता की अंतर्ध्वनि सुनी जा सकती है। भाषा और लिपि की बहुरूपता के बावजूद हिंदी के साथ सभी भाषाओं में भारतीय आत्मा की धड़कन को अनसुनी नहीं कया जा सकता। भारतीय साहित्य के साथ भक्तिकालीन साहित्य में इसके दृष्टांत खोजे जा सकते हैं। तत्कालीन शासकीय प्रतिकूलता को भक्तों ने अध्यात्मपरक साहित्यिक प्रतिरोध द्वारा अनुकूलता में बदल दिया था। इसमें सभी भारती भाषाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान है। तमिल, मलयालम, तेलुगु और कन्नड़ भाषा के शब्दों का हिंदी के भक्ति गीतों में गायन इसी तथ्य का संकेत करता है। सांस्कृतिक एकता की मजबूती साझापन में ही निहित होती है। अकारण नहीं कि भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी का यह साझापन राष्ट्रीय एकता को राष्ट्रीयता से संबद्ध करते हुए प्रसिद्ध कथाकार निर्मल वर्मा लिखते हैं कि 'भाषा, मिथक और संस्कृति की कल्पना ग्रीक और लातीनी भाषा तथा उससे संबंधित मिथक-कथाओं से अलग नहीं की जा सकती। उसी तरह भारतीय संस्कृति ने अपना रूपाकार संस्कृत में रची उन पौराणिक कथाओं और महाकाव्यों से प्राप्त किया था जिसकी आदिम स्मृति (आर्कीटाप मेमोरी) आज भी भारतीय मानस पर अंकित है।'

इस संदर्भ में हिंदी और हिंदीतर भारतीय भाषाओं की एकता संबंधी अंतश्चेतना देखना अपेक्षित लगता है। कहना न होगा कि इस अंतर्चेतना का सीधा जुड़ाव राष्ट्रीय एकता से है।

❑❑❑

सुनील कुमार महला
(फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार)

अंतरिक्ष में सिरमौर बन रहा है भारत

29 जनवरी 2025 बुधवार को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने इतिहास रच दिया। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इसरो के श्री हरिकोटा से ऐतिहासिक 100वां प्रक्षेपण सफल रहा है। हालांकि, 100वां प्रक्षेपण 46 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद हुआ है, लेकिन यह बड़ी उपलब्धि है। उल्लेखनीय है कि सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (एसएलवी) 10 अगस्त, 1979 को श्रीहरिकोटा से लॉन्च होने वाला पहला बड़ा रॉकेट था। बहरहाल,आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में 29 जनवरी 2025 को सुबह 6 बजकर 23 मिनट पर एनवीएस-02 को ले जाने वाले जीएसएलवी-एफ15 को सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया। कहना गलत नहीं होगा कि भारत अंतरिक्ष नेविगेशन में नई ऊंचाइयों पर पहुंच गया है। वास्तव में यह हर भारतीय को गौरवान्वित करने वाला पल रहा। इसरो की यह उपलब्धि दिखाती है कि भारत विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में नित नवीन बुलंदियों को छू रहा है। यह भारत की अंतरिक्ष अन्वेषण/शोध के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और बढ़ती क्षमता/ताकत को भी बखूबी प्रमाणित करती है। गौरतलब है कि हाल ही में श्री सोमनाथ का स्थान लेते हुए डॉ. वी. नारायणन ने 13 जनवरी 2025 को ही इसरो के अध्यक्ष, अंतरिक्ष विभाग के सचिव, अंतरिक्ष आयोग के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया है।सच तो यह है कि इसरो के नए प्रमुख डॉ. वी. नारायणन के कार्यकाल और वर्ष 2025 का यह पहला अभियान है। उल्लेखनीय है कि इसरो 1969 में स्थापित किया गया था, और कभी इसरो को अपने रॉकेट ले जाने के लिए साइकिल तक का इस्तेमाल करना पड़ा था। यही नहीं, 1981 में भारत ने जब अपना छठा सैटेलाइट एप्पल लॉन्च किया था, तब इसे पैलोड तक बैलगाड़ी से ले जाना पड़ा था।सच तो यह है कि इसरो ने साइकिल और बैलगाड़ी पर ले जाने के युग से लेकर चंद्रमा तक अपनी पहुंच बनाने तक के सफर में रचा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पिछले साल 23 अगस्त वर्ष 2024 में चंद्रयान-3 ने चांद के साउथ पोल पर सॉफ्ट लैंडिंग करके इतिहास रच दिया था और ऐसा करने वाला भारत दुनिया का पहला देश है। कितनी बड़ी बात है कि सीमित संसाधनों के बावजूद असाधारण सफलताएं अर्जित करने वाले इसरो ने हमेशा अपनी वैज्ञानिक दक्षताओं और नवाचारों से पूरी दुनिया को चौंकाया है। हमारे लिए इससे बड़ी और बेहतर बात भला और क्या हो सकती है कि हमारे देश भारत ने हॉलीवुड फिल्म ग्रेविटी से भी कम बजट में मंगल मिशन को लॉन्च किया था। हाल फिलहाल, इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने यह बात कही है कि- 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसी अगले पांच वर्षों

में 100 मिशन लॉन्च करने के लिए काम करेगी।' मतलब यह है कि इसरो का अगले पांच वर्षों में लक्ष्य 100 मिशन लॉन्च करने का लक्ष्य है। पाठकों को बताता चलूं कि 100 वें मिशन के लॉन्च के बाद इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने कहा, 'आज हमने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है।' उन्होंने कहा, 'इसरो की टीम की कड़ी मेहनत और टीम वर्क से इसरो का 100वां प्रक्षेपण सफलतापूर्वक पूरा हुआ है।' गौरतलब है कि भारत का अपना नेविगेशन सिस्टम है। दरअसल, जीएसएलवी-एफ-15 पेलोड फेयरिंग में 3.4 मीटर व्यास वाला एक धातु संस्करण था और इसने एनवीएस-02 उपग्रह को जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में स्थापित किया। एनवीएस-02 नेविगेशन विद इंडियन कांस्टेलेशन सिस्टम के लिए दूसरी पीढ़ी के उपग्रहों का हिस्सा है। यह एनवीएस-02 का 5वां उपग्रह है। जानकारी के अनुसार वर्तमान में, इनमें से चार उपग्रह चालू हैं। बहरहाल, इसरो के चैयरमेन ने यह बात कही है कि उन्हें हाल फिलहाल इस साल लॉन्च के लिए चंद्रयान 3 और 4 जैसे कई प्रोजेक्ट के लिए मंजूरी मिल गई है। उन्होंने यह बात कही है कि 'इस साल के लिए बहुत सारे मिशन तैयार हैं।' गौरतलब है कि उन्होंने नए कुलसेकरपट्टिनम लॉन्च पैड का भी उल्लेख किया है। दरअसल, तमिलनाडु के तटीय गांव कुलसेकरपट्टिनम में स्थित, इस स्पेसपोर्ट का निर्माण माइक्रोसैटेलाइट और नैनोसैटेलाइट जैसे छोटे उपग्रहों को लॉन्च करने के लिए किया जा रहा है। नारायणन ने कहा है कि , 'दो साल के भीतर कुलसेकरपट्टिनम लॉन्च पैड में सभी सुविधाएँ तैयार हो जाएंगी। उसके बाद हम वहाँ से सभी तरह के मिशन लॉन्च करने की उम्मीद करेंगे।' बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि अंतरिक्ष के क्षेत्र में आज भारतीय वैज्ञानिकों का कोई सानी नहीं है और भारतीय मेधा अंतरिक्ष के क्षेत्र में पूरी तन्मयता, लगन और निष्ठा से काम कर रही है। सच तो यह है कि इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन आज स्पेस में नई इबारत लिख रहा है। ऊपर बता चुका कि हम चांद पर कदम रख चुके हैं। चांद के उस कोने तक जा चुके हैं, जहां आज तक कोई नहीं जा पाया है। इतना ही नहीं,अब तक हम सूरज के नजदीक भी पहुंच चुके हैं। आदित्य-एल-1, 1.5 मिलियन किलोमीटर की दूरी से सूर्य का अध्ययन करने वाला पहला अंतरिक्ष आधारित वेधशाला श्रेणी का भारतीय

सौर मिशन है। आज भारत एआई के क्षेत्र में भी लगातार आगे बढ़ रहा है और आने वाले समय में हम एआई की मदद से अंतरिक्ष के क्षेत्र में और अधिक उपलब्धियां हासिल करेंगे, ऐसी संभावनाएं हैं। बहरहाल, सौवें मिशन के रूप में जीएसएलवी-एफ 15 की सफलता यही साबित करती है कि भारत की अंतरिक्ष एजेंसी अब वैश्विक अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा में भी अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। आज पूरी दुनिया भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी और इसके वैज्ञानिकों का लोहा मान रही है। विदेशों ने हमारी अंतरिक्ष क्षमताओं पर भरपूर विश्वास जताया है और आज अनेक विदेशी उपग्रहों को इसरो द्वारा लांच किया जा रहा है। गौरतलब है कि इस संबंध में कुछ समय पहले ही केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में यह जानकारी दी थी कि इसरो ने अपनी वाणिज्यिक शाखा के जरिये वैश्विक ग्राहकों के लिए उपग्रहों को प्रक्षेपित करके 27.90 करोड़ डालर की विदेशी मुद्रा अर्जित की है। वास्तव में यह हमारे देश की एक बड़ी उपलब्धि है। हाल फिलहाल, इसरो का ताजा अभियान और इससे पहले के भी कई अभियान अंतरिक्ष के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत की दिशा में बढ़ते कदमों की ओर इशारा करते हैं। यह बताता है कि इसरो लगातार अंतरिक्ष में बड़ी छलांग की ओर अग्रसर है। आने वाले समय में हम अंतरिक्ष में विश्व में सिरमौर देश होंगे।

❑❑❑

कविता-

अशोक गुजराती

कोहनी

वह आ रही थी,
ये जा रहे थे
आई पलटकर वह,
बोली गुस्से में
कोहनी क्यों मारी आपने?
पल भर बने रहे उजबक ये,
फिर कहा
बहन जी,
आपको हुई है
गलतफहमी
दाहिने कंधे पर लटके झोले को
फिसलने से रोकने के चक्कर में
ऊपर उठी बाईं कोहनी
शायद लगी हो आपको
क्षमा चाहता हूं...
इनकी प्रौढ़ता को तौलते हुए
वह चली गयी
कोहनी जानती थी-
सच्चाई क्या है!
बचपन में स्कूल छूटने के पश्चात
ये खेलते रहते थे कबड्डी

अपने सहपाठी
रमेश गोटीराम पिंपळे के साथ
हां, वे ही दोनों
शरद जोशी के
दो हॉकी खिलाड़ियों की तर्ज पर
जब देर शाम लौटते थे घर
होती थीं
उनकी कोहनियां छिली हुईं
बहरहाल,
अगले दिन फिर वही
रमेश गोटीराम पिंपळे...
युवा हुए तो चल पड़े
डगर पर प्रेम की
साधारण-सी थी उनकी प्रेमिका
लेकिन जिस दिन देखा इन्होंने
उसे टेबिल पर टिकाकर कोहनियां
दोनों हथेलियों में
सम्भाले अपना चेहरा
उसकी सुंदरता ने
अभिभूत कर दिया इन्हें...
अब भी थाम लेते हैं
बार-बार दिल अपना
पुरानी यादों में खोये हुए
इस क्रिया को नहीं दे पाते पूर्णता
यदि साथ न दे पाती
उनके दाहिने हाथ की कोहनी...
इस तरह लड़ा रहे थे वे पंजा
काल से-
अपनी कोहनियों के बल पर!

बी-403, निहारिका ऐब्सोल्यूट,
सेक्टरः 39-ए, खारघर-नवी मुंबई-410 210

❑❑❑

कविता-

अमिता अम्बस्ट

सपने देते हैं हम सब

बड़े-छोटे, अवस्था के अनुरूप सपने
सपनो की एक
निर्मल कलकल करती नदी,
बहती है युवा पीढ़ी की आंखों में...
महत्वाकांक्षाओं का विराट सागर
व्याकुल रहता है तट को छूने
भौतिक वस्तुओं को शीघ्र पाने की चाह
कभी-कभी उन्हें
उन अंधेरी गलिओं में ढकेल देती हैं
जहाँ से निकल पाना
लगभग असंभव हो जाता है
बड़ी देर हो चुकी होती है
तब,सहज-सरल धारा में लौटना
बस गहन पश्चाताप ही
मथता रहता है उनके अंतस को
सपने हम सब देखते हैं
अवस्था के अनुरूप
होता है उनका रूप
सपनो को मूर्तरूप देने
कहाँ जरूरत होती है
किसी मुहूर्त की
धैर्य, आत्मविश्वास, श्रम, विनम्रता दृढ़संकल्प
सफलता केपथ की
पाथेय बन जाती हैं...

चित्रकूट अपार्टमेंट, राँची

❑❑❑

गोपाल आत्माराम बाघ

जीना है तो ऐसे जीयो...

जीवन के हर पल जीयो
दिल की हर धड़कन पर जीयो
जिंदगी की हर गरिमा पर जीयो
मन के हर अरमा पर जीयो
जीना है तो ऐसे जीयो...

दिन रात हर पहलू पर जीयो
दुनिया के हर दस्तूर पर जीयो
जीवन के हर रिश्ते पर जीयो
संबंधों के हर नमी पर जीयो
जीना है तो ऐसे जीयो...

मंजिल की हर उम्मीदों पर जीयो
अपने खुद हर आदर्श पर जीयो
अपने खुद हर अंदाज पर जीयो
अपने खुद हर अनुभव पर जीयो
जीना है तो ऐसे जीयो...

जीवन की हर धार पर जीयो
हालात के हर अरसे पर जीयो
कुदरत के हर करिश्मे पर जीयो
सासों ही हर दहलीज पर जीयो
जीना है तो ऐसे जीयो...

मो.-9819001518

❑❑❑

बाल कविता-

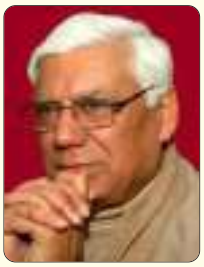

दिविक रमेश

अच्छा तुमको खूब लगेगा

बहुत थकी थी उस दिन मम्मी
काम बहुत थे लेकिन अब भी
सच कहता हूं मैंने देखा
एक अजूबा घर में तब ही।

अगर न समझो मुझको बुद्धू
मैं तो तभी बताऊँगा ना!
बिना बात के वरना यूं ही
क्यों मजाक उड़वाऊंगा ना!

लगा कि जैसे बोल रहे थे
झूठे बर्तन खन-खनक कर
और उधर वह साफ-सफाई
बोल रही थी मटक-मटक कर।

अगर काम सब मिलजुल कर लो
मम्मी को आराम मिलेगा।
जब न दिखेंगी थकी-थकी वे
अच्छा तुमको खूब लगेगा।

नाक-कान पर तेरे चढ़ते

माँ तू मुझे सुला कर सोती
क्या माँ, माँ ऐसी ही होती?
कभी कहानी, लोरी गाती
नई-नई बातें समझाती।

भूत-वूत से नहीं डराती
साहब के किस्से सब गाती।
कहती राजा नहीं है बनना
गांधी की सी सेवा करना।

अपना पेट सभी भरते हैं
सब कुछ भी चिंता करते हैं।
धरती हो या अंतरिक्ष ही
बातें युद्ध की न करते हैं।

हर ग्रह की बात बताना
माँ कहां से तुमने सीखा?
जो कठिन उसको सुलझाना
माँ कहां से तुमने सीखा?

माँ मैंने तुमको देखा है
तरह-तरह की पुस्तक पढ़ते!
बड़े मजे से माँ चश्मे को
नाक-कान पर तेरे चढ़ते!

वाह जी वाह, वाह जी वाह

वाह जी वाह, वाह जी वाह
अपनी भी दादी घर आई।
भरकर के कितनी सौगातें
साथ अटैची भी तो लाई।

मैंने पूछा हंसी-हंसी में
नाम जरा तो बतलाओ।
खोल अटैची हमको अपनी
सौगातें जल्दी दिखलाओ।

हर साल तो इन्हीं दिनों में
आती हूं मैं गरमी दादी।
क्या सौगातें लाई होगी
यह तुम्हारी प्यारी दादी?

हां दादी, आमों की खूशबू
खरबूजों की महकें लाई।
लेकर तरबूजों की लाली
ठंडे-मीठे शरबत लाई।

आइसक्रीम और कुल्फी भी
तरह-तरह की लाई हो ना!
और छुट्टियां गरमी की भी
बड़े मजे की लाई हो ना!

दादी सोनू को लगता है
आप पसीना लेकर आती!
सोख के पानी तालाबों का
हर प्राणी को खूब सताती!

पर दादी मुझको तो लगता
कुछ मजे बस आप ही लाती!
हमें देखने होंगे गुण भी
प्यारी माँ हमको समझाती।

9910177099

❑❑❑

गतिविधियां–

'धर्मवीर भारती जन्मशती उत्सव' के भारती जी को अर्पित भव्य दीपांजलि...

हिन्दी साहित्य की महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर पुष्पा भारती के कर-कमलों द्वारा हुआ। दीपांजलि में रंगकर्मी रामगोपाल बजाज, अभिनेता, संगीतकार व पटकथा लेखक पीयूष मिश्रा, कथाकार व नाटककार असगर वजाहत, लेखक व गीतकार समीर 'अनजान', पत्रकार व लेखक विश्वनाथ सचदेव, फिल्म लेखक व अभिनेता अतुल तिवारी, वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना, वरिष्ठ लेखक हरीश पाठक और वाणी प्रकाशन ग्रुप के प्रबन्ध निदेशक अरुण माहेश्वरी, वाणी प्रकाशन की कार्यकारी निदेशक अदिति माहेश्वरी-गोयल की गरिमामयी उपस्थिति रही। साथ 'गुनाहों का देवता' के 164वें संस्करण की प्रति पुष्पा भारती जी को भेंट की गयी और व्याख्यान माला का शुभारम्भ हुआ।

सभागार में उपस्थित श्रोताओं ने खड़े होकर जोरदार तालियों के साथ पुष्पा जी का अभिनन्दन किया। यह नजारा अभिन्न था...

व्यंग्य यात्रा

'व्यंग्य यात्रा'

'व्यंग्य यात्रा' हिंदी साहित्य की एक प्रतिष्ठित त्रैमासिक पत्रिका है, जो मुख्य रूप से व्यंग्य विधा को समर्पित है। व्यंग्य साहित्य के संवर्धन और संरक्षण की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यह पत्रिका समकालीन समाज की सच्चाइयों को व्यंग्य के माध्यम से उजागर करने का प्रभावी मंच है।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स, ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

मोबाइल : +91-9811154440
ई-मेल-
yatravyangya2004@gmail.com
premjanmejai@gmail.com

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : 9911077754, 8920111592

विश्व कैंसर दिवस पर संदेश

मुंबई में आयोजित विश्व कैंसर दिवस की पूर्व संध्या पर, प्रमुख ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. अनिल डी'क्रूज ने भारत में तेजी से बढ़ते कैंसर मामलों को लेकर गंभीर चेतावनी दी। उन्होंने जोर देकर कहा कि रोकथाम और प्रारंभिक पहचान ही इस घातक बीमारी के खिलाफ सबसे प्रभावी हथियार हैं। समाजसेवी डॉ. हरीश शेट्टी के नेतृत्व में चल रहे 'जागेगा भारत तो बचेगा भारत' अभियान के तहत इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने इस संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने खास काव्यात्मक अंदाज में लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ाने और रोकथाम के उपायों पर बल दिया।

डॉ. डी'क्रूज ने बताया कि भारत में लगभग 40% कैंसर के मामले तंबाकू के सेवन से होते हैं। उन्होंने तंबाकू पर सख्त प्रतिबंध लगाने और लोगों से तुरंत धूम्रपान व तंबाकू चबाने की आदत छोड़ने का आग्रह किया। विटामिन ए, बी और सी से भरपूर और फाइबरयुक्त फलों व सब्जियों का सेवन कैंसर के जोखिम को कम कर सकता है।

-गुरप्रीत

❑❑❑

हिंदी का वैश्विक परिदृश्य

संत जेवियर कॉलेज (सशक्त स्वायत्त संस्थान), मुंबई, भारतीय वैश्विक परिषद्, नई दिल्ली, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 20 एवं 21 जनवरी 2025 को दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हिंदी का वैश्विक परिदृश्य विषय पर किया गया। इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन में डॉ. अलका धनपत, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस से, डॉ. रतन सिंह, मास्को, रूस से, सुश्री लिलिया खोवायेवा, मास्को, रूस से एवं डॉ. शिरीन कुरैशी, कोलंबो, श्रीलंका से इस आयोजन में शामिल हुए, साथ ही भारत के विभिन्न राज्यों जैसे- गोवा, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, गुजरात, राजस्थान, झारखंड, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश, केरल, उत्तर-प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से भी विविध विषयों के विद्वान उपस्थित रहे। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उद्घाटन एवं समापन सत्र के अलावा कुल छः सत्रों का आयोजन किया गया।

-डॉ. सुलभा कोरे

❑❑❑

एम पावर सोशल एंड एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा 'भारत निर्माण गढ़ पुरस्कार 2025' का आयोजन

मुंबई में 28 जनवरी 2025 को आयोजित कार्यक्रम अमेरिकी विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. कोलाम्बे की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। उत्तर प्रदेश और हरियाणा के राजनीतिक नेताओं, पुलिस अधिकारियों, डॉक्टरों, फिल्म अभिनेताओं, अभिनेत्रियों, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, अभिनेताओं, लेखकों, पत्रकारों की उपस्थिति के साथ बड़े उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

इस समारोह में डॉ. आशुभा खेडेकर, राधा अहेर, गजेंद्र सोलंकी, गजानन दुबल, वैभवी कदम, दस्तगीर शेख, बालकृष्ण सनस, गणेश वाघ, विजय पाटकर, शेख जमील, शेख उस्मान, विद्या शिंदे, प्रशांत गवली, संतोष सिंह और ऑनरेबल डॉ. डिग्री के साथ-साथ शांति राजदूत डॉ. शोणित भट, डॉ. विजय कुमार पंडित, डॉ. राजेंद्र बोरकर, डॉ. विजय नायडू, डॉ. स्नेहा डोबले, डॉ. सोमशेखर के. को 'भारत निर्माण गढ़ पुरस्कार 2025' से सम्मानित किया गया।

बाबुभाई भवांची, रिहाना शेख,
डॉ. घनश्याम कळंबे चेयरमैन 'भारत निर्माण गढ़ पुरस्कार'

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आसरा मुक्तांगण के अकादमिक मंडल की सदस्य, सहयोगी और मार्गदर्शी तथा श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ की पूर्व उप निदेशक, डॉ. माधुरी छेडा जी का 11 जनवरी, 2025 को बाम्बे अस्पताल में दु:खद निधन हुआ। बहुत ही प्यारी शख्सियत माधुरी जी दो महीनों से अस्पताल में भर्ती थीं और विभिन्न बीमारियों से जूझ रही थीं। एक अच्छे शिक्षक के रूप में अपने विद्यार्थियों के बीच प्रिय माधुरी जी हिंदी की जानी मानी लेखक थीं। आसरा मुक्तांगण, स्व. डॉ. माधुरी छेडा जी को विनम्र अभिवादन करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

भक्ति का असली स्वरूप

'जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक उपलब्धियों में नहीं बल्कि आत्मिक उन्नति में निहित है।' ये उद्‌गार निरंकारी सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने महाराष्ट्र के 58वें वार्षिक निरंकारी सन्त समागम के तीसरे एवं समापन दिवस पर लाखों की संख्या में उपस्थित मानव परिवार को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। इस तीन दिवसीय समागम का 26 जनवरी को विधिवत रूप में सफलता पूर्वक समापन हुआ।

सतगुरु माता जी ने आगे कहा कि मनुष्य जीवन को इसलिए ऊँचा माना गया है, क्योंकि इस जीवन में आत्मज्ञान प्राप्त करने की क्षमता है। परमात्मा निराकार है, और इस परम सत्य को जानना मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए।

सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं आदरणीय निरंकारी राजपिता जी के पावन सान्निध्य में सोमवार 27 जनवरी को आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में महाराष्ट्र के अतिरिक्त देश के कई राज्यों एवं दूर देशों से आये 93 युगल परिणय सूत्र में बंधे।

सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज ने फरमाया कि जीवन में ज्ञान और कर्म के संगम से जीवन खुशहाल बन सकता है। जैसे एक पंछी को उड़ान भरने के लिए दोनों पंखों की आवश्यकता होती है, वैसे ही जीवन को ऊंचा उठाने के लिए ज्ञान के अनुसार कर्म करने की आवश्यकता होती है। ब्रह्मज्ञानी भक्त जीवन में परमात्मा से जुड़कर हर कार्य उसके अहसास में करता है यही भक्ति का असली स्वरूप है।

समागम में काईरोप्रैक्टिक तकनीक के द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य लाभ का शिविर आयोजित किया गया। यह तकनीक पूर्ण तोर पर रीढ़ की हड्डी से जुडी है। इस तकनीक द्वारा हर रोज लगभग हजार लोग समागम में इस सेवा का लाभ उठा रहे थे। ऑस्ट्रेलिया, यूनाईटेड किंगडम, फ्रांस, अमेरिका के 18 डॉक्टरों की टीम समागम ग्राउंड में अपनी निस्वार्थ सेवाएं प्रदान कर रही थी। इस वर्ष करीब 3500 से अधिक जरुरतमंद

श्रद्धालुओं ने इस स्वास्थ्य सुविधा का लाभ प्राप्त किया।

समागम में आने वाले सभी श्रद्धालुओं के लिए नि:शुल्क लंगर की व्यवस्था तीन स्थानों पर 24 घंटे उपलब्ध थी। इस लंगर व्यवस्था में 72 क्विंटल चावल एक ही समय पर पकाने की क्षमता थी। 70 हजार श्रद्धालु एक ही समय भोजन कर सकते थे। इसके अतिरिक्त अत्यधिक रियायती दरों पर 4 कॅन्टीन्स की व्यवस्था भी की गई थी जिसमें अल्पाहार, मिनरल वॉटर एवं चाय-कॉफी इत्यादि सामग्री प्राप्त हो रही थी।

समागम में आदरणीय निरंकारी राजपिता रमित जी ने अपने विचारों में कहा- 'भक्ति का उद्देश्य परमात्मा के साथ एक प्रेमपूर्ण संबंध बनाना होना चाहिए, संतों का जीवन एक प्रेरणास्रोत होता है जो हमें अपनी आत्मा की वास्तविकता को पहचानने और जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ाने की शिक्षा देता है। हमें अपनी आस्था और श्रद्धा को सच्चाई की ओर मोड़ना चाहिए और जीवन के हर कदम में परमात्मा के प्रेम को महसूस करना चाहिए तभी सही मायनो में भक्ति का विस्तार सार्थक होगा।'

राकेश मुटरेजा, मेंबर इंचार्ज, पब्लिसिटी दिल्ली

❑❑❑

पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित 58वे निरंकारी संत समागम की कुछ छवियां

RNI NO. MAHHIN/2012/45032

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक महानंदा एम. शिरकर द्वारा साई ऑफसेट, डी-39, अमरज्ञान इंडस्ट्रियल इस्टेट, एस.टी. डेपो के सामने खोपट, ठाणे (महाराष्ट्र) से मुद्रित एवं मंगल प्रभात, सूर्य नगर, विटावा, ठाणे-400605 से प्रकाशित
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com मोबाइल- 09029784346, 08108400605